RNI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

GARVI GUJARAT

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 16
अंक : 005
दि. 05.05.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

- बंगाल विजय के बाद देश में होंगे भाजपा के 17 मुख्यमंत्री
- देश की 31 विधानसभाओं में राजग के होंगे 22 मुख्यमंत्री
- देश भर के 4126 विधायकों में भाजपा के होंगे लगभग 1800 विधायक

चुनावी जीत के बाद राष्ट्रीय राजनीति में भाजपा की बढ़ती पकड़ और नए शक्ति समीकरण

नई दिल्ली। देश की राजनीति एक बार फिर निर्णायक मोड़ पर खड़ी दिखाई दे रही है, जहां हाल ही में संपन्न हुए पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों ने सत्ता संतुलन को नई दिशा दे दी है। इन चुनावों के परिणामों ने भारतीय जनता पार्टी और उसके नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को पहले से अधिक मजबूत स्थिति में ला खड़ा किया है। राजनीतिक गलियारों में अब यह चर्चा तेज हो गई है कि आने वाले समय में देश की सत्ता संरचना और भी अधिक केंद्रीकृत और प्रभावशाली रूप में भाजपा के इर्द-गिर्द घूमती नजर आ सकती है।

पश्चिम बंगाल जैसे बड़े और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण राज्य में जीत ने भाजपा के आत्मविश्वास को नई ऊंचाई दी है। इस जीत के साथ ही देश की 31 विधानसभाओं में से 22 में अब राजग की सरकारें हो गई हैं, जिनमें से 17 राज्यों में सीधे भाजपा के मुख्यमंत्री सत्ता की कमान संभाल रहे हैं, जबकि शेष में सहयोगी दलों के नेता सरकार चला रहे हैं। यह आंकड़ा केवल एक संख्या नहीं, बल्कि उस व्यापक राजनीतिक विस्तार का संकेत है, जिसे भाजपा ने पिछले एक दशक में लगातार मजबूत किया है। इस नई स्थिति का प्रभाव केवल राज्यों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका असर संसद और राष्ट्रीय राजनीति के हर स्तर पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। लोकसभा में 543 सीटों में से भाजपा के पास अपने 240 सांसद हैं, जबकि राजग के साथ यह संख्या 292 तक पहुंच जाती है। यह आंकड़ा स्पष्ट करता है कि केंद्र में भाजपा और उसके सहयोगियों की स्थिति अभी भी बेहद मजबूत बनी हुई है। राज्यसभा में भी पार्टी का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है, जहां 245 सदस्यों में से भाजपा के 113 सदस्य हैं और राजग के साथ यह संख्या 147 तक पहुंचती है।

विधानसभाओं के आंकड़ों पर नजर डालें तो यह तस्वीर और भी दिलचस्प हो जाती है। देशभर में कुल 4126 विधायकों में से भाजपा के अपने लगभग 1800 विधायक होने का अनुमान है, जो कि कुल संख्या का एक बड़ा हिस्सा है। यदि इसमें राजग के सहयोगी दलों के विधायकों को जोड़ दिया जाए, तो यह आंकड़ा करीब 2500 तक पहुंच जाता है। यह स्थिति न केवल भाजपा की संगठनात्मक मजबूती को दर्शाती है, बल्कि यह भी बताती है कि पार्टी ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी जड़ें कितनी गहराई तक फैला ली हैं।

हालांकि, यह भी सच है कि कुछ क्षेत्र अभी भी ऐसे हैं, जहां भाजपा को अपनी उपस्थिति मजबूत करने की जरूरत है। दक्षिण भारत और पूर्वोत्तर के कुछ हिस्सों में पार्टी का प्रभाव अपेक्षाकृत सीमित रहा है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में इन क्षेत्रों में भी भाजपा ने धीरे-धीरे अपनी पकड़ बनानी शुरू कर दी है। पश्चिम बंगाल की जीत इसी दिशा में एक बड़ा संकेत मानी जा रही है, जो यह दर्शाता है कि पार्टी अब उन क्षेत्रों में भी विस्तार कर रही है, जहां पहले उसकी उपस्थिति कमजोर मानी जाती थी। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि भाजपा की इस सफलता के पीछे केवल चुनावी रणनीति ही नहीं, बल्कि एक मजबूत संगठनात्मक ढांचा और नेतृत्व की स्पष्ट दिशा भी है। पार्टी ने बूथ स्तर तक अपनी पहुंच बनाई है और कार्यकर्ताओं के माध्यम से जनसंपर्क को लगातार मजबूत किया है। इसके अलावा, केंद्र और राज्यों में लागू की गई योजनाओं और नीतियों का भी इस सफलता में महत्वपूर्ण योगदान माना जा रहा है।

विधान परिषदों में भी भाजपा और राजग की स्थिति लगातार मजबूत होती जा रही है। देशभर में 423 सदस्यों में से भाजपा के 165 सदस्य हैं, जबकि राजग के साथ यह संख्या 224 तक पहुंचती है। यह आंकड़ा इस बात का संकेत है कि पार्टी ने केवल प्रत्यक्ष चुनावों में ही नहीं, बल्कि अप्रत्यक्ष चुनावी प्रक्रियाओं में भी अपनी पकड़ मजबूत की है।

इन सभी आंकड़ों को मिलाकर देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि भाजपा और राजग का राजनीतिक प्रभाव वर्तमान समय में अपने चरम पर है। यह स्थिति विपक्ष के लिए एक बड़ी चुनौती बनकर उभरी है, जो अभी तक एकजुट रणनीति बनाने में संघर्ष करता नजर आ रहा है। आने वाले चुनावों में यह देखना दिलचस्प होगा कि विपक्ष इस मजबूत स्थिति का मुकाबला किस प्रकार करता है और क्या वह कोई नया राजनीतिक समीकरण तैयार कर पाता है। फिलहाल, देश की राजनीति में जो तस्वीर उभरकर सामने आ रही है, वह यह संकेत देती है कि भाजपा का प्रभाव केवल एक दल तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि वह एक व्यापक राजनीतिक धारा का रूप ले चुका है। राज्यों से लेकर संसद तक, हर स्तर पर उसकी उपस्थिति और प्रभाव लगातार बढ़ रहा है, जो आने वाले वर्षों में देश की राजनीति की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

मुंबई डिवीजन में रेल परिचालन का विशाल नेटवर्क बढ़ती मांग के बीच रेलवे की बड़ी चुनौती और सफलता

मुंबई। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में रेल व्यवस्था केवल एक परिवहन साधन नहीं, बल्कि जीवनरेखा के रूप में कार्य करती है। इसी व्यवस्था को संभालने वाला मध्य रेलवे का मध्य रेलवे का मुंबई डिवीजन आज यात्रियों की अभूतपूर्व भीड़ और बढ़ती मांग के बीच एक विशाल परिचालन तंत्र को सफलतापूर्वक संचालित कर रहा है। प्रतिदिन हजारों ट्रेनों और लाखों यात्रियों का प्रबंधन करना न केवल तकनीकी दृष्टि से चुनौतीपूर्ण है, बल्कि प्रशासनिक क्षमता की भी कड़ी परीक्षा है।

वर्तमान समय में मुंबई डिवीजन से प्रतिदिन लगभग 2150 से अधिक ट्रेनें संचालित की जा रही हैं, जिनके माध्यम से करीब 50 लाख यात्री रोजाना अपने गंतव्य तक पहुंचते हैं। यह आंकड़ा अपने आप में दुनिया के सबसे व्यस्त रेलवे नेटवर्क में से एक को दर्शाता है, जहां हर मिनट हजारों लोग यात्रा कर रहे होते हैं। मुंबई की लोकल ट्रेनें, जिन्हें शहर की "लाइफलाइन" कहा जाता है, इस पूरे नेटवर्क की रीढ़ हैं।

लोकल ट्रेनों का परिचालन इस समय लगभग 1820 सेवाओं तक पहुंच चुका है, जिनमें लगभग 45 लाख यात्री प्रतिदिन यात्रा करते हैं। यह संख्या यह बताती है कि मुंबई और आसपास के उपनगरों की जीवनशैली पूरी तरह से रेल प्रणाली पर निर्भर है। ऑफिस जाने वाले कर्मचारी, छात्र, व्यापारी और आम नागरिक सभी इसी नेटवर्क पर निर्भर रहते हैं। लंबी दूरी की ट्रेनों, यानी मेल और एक्सप्रेस सेवाओं की बात करें तो सामान्य दिनों में लगभग 200 ट्रेनें चलती थीं, लेकिन बढ़ती मांग को देखते हुए इनकी संख्या बढ़ाकर लगभग 230 कर दी गई है। इन ट्रेनों के माध्यम से रोजाना करीब 5 से 6 लाख यात्री देश के विभिन्न हिस्सों की यात्रा करते हैं। यह विस्तार यह दर्शाता है कि रेलवे प्रशासन लगातार बदलती परिस्थितियों के अनुसार अपनी सेवाओं को समायोजित कर रहा है।

इस व्यापक नेटवर्क के तहत विभिन्न राज्यों के लिए स्पेशल ट्रेनों का संचालन भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान में मुंबई डिवीजन से कुल 1022 स्पेशल ट्रेनों का संचालन किया जा रहा है। इनमें सबसे अधिक ट्रेनों की संख्या उत्तर प्रदेश के लिए है, जहां लगभग 480 ट्रेनें चलाई जा रही हैं। इसके बाद बिहार के लिए 262 ट्रेनें संचालित हो रही हैं। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि उत्तर भारत की ओर यात्रा करने वाले यात्रियों की मांग सबसे अधिक है।

इसके अलावा महाराष्ट्र के भीतर ही विभिन्न शहरों को जोड़ने के लिए 135 ट्रेनें चलाई जा रही हैं, जिससे राज्य के भीतर कनेक्टिविटी मजबूत बनी हुई है। पश्चिम बंगाल के लिए 43 ट्रेनें, तमिलनाडु के लिए 30 और तेलंगाना के लिए 24 ट्रेनें भी इस नेटवर्क का हिस्सा हैं। यह विविधता दर्शाती है कि मुंबई देश के लगभग हर हिस्से से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है।

मध्य रेलवे का कुल नेटवर्क और भी विशाल है। पूरे क्षेत्र में लगभग 3093 स्पेशल ट्रेनों का संचालन किया जा रहा है। इसमें पुणे डिवीजन सबसे आगे है, जहां 1227 ट्रेनें संचालित होती हैं। इसके बाद सोलापुर डिवीजन में 447 ट्रेनें, भुसावल डिवीजन में 291 ट्रेनें और नागपुर डिवीजन में 106 ट्रेनें चलाई जा रही हैं। यह आंकड़े बताते हैं कि मध्य रेलवे केवल मुंबई तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे महाराष्ट्र और आसपास के क्षेत्रों में इसकी मजबूत पकड़ है। यात्रियों की बढ़ती संख्या के साथ-साथ रेलवे को माल ढुलाई का भी जिम्मा संभालना पड़ता है, जो देश की अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मुंबई डिवीजन में प्रतिदिन लगभग 100 मालगाड़ियों का संचालन किया जा रहा है। ये मालगाड़ियां औद्योगिक वस्तुओं, खाद्य सामग्री और अन्य आवश्यक वस्तुओं के परिवहन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

रेलवे प्रशासन के लिए सबसे बड़ी चुनौती नियमित ट्रेनों के साथ-साथ अतिरिक्त ट्रेनों का सफल संचालन करना है। वर्तमान में प्रतिदिन लगभग 30 अतिरिक्त ट्रेनों का संचालन किया जा रहा है, जो मांग के अनुसार जोड़ी जाती हैं। यह प्रक्रिया तकनीकी रूप से जटिल होती है, क्योंकि इसमें समय प्रबंधन, ट्रैक उपलब्धता और सुरक्षा मानकों का विशेष ध्यान रखना पड़ता है।

इसके बावजूद, रेलवे प्रशासन यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। समयबद्धता बनाए रखने के लिए लगातार निगरानी की जाती है और तकनीकी प्रणाली को भी उन्नत किया जा रहा है। डिजिटल मॉनिटरिंग, सिग्नलिंग सिस्टम और कंट्रोल रूम की मदद से पूरे नेटवर्क को नियंत्रित किया जाता है।

मुंबई डिवीजन का यह विशाल रेल नेटवर्क केवल परिवहन व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह लाखों लोगों के जीवन का हिस्सा है। सुबह की भीड़, प्लेटफॉर्म पर दौड़ते यात्री, और ट्रेनों की निरंतर आवाजाही इस शहर की पहचान बन चुकी है। यह व्यवस्था यह भी दिखाती है कि कैसे एक संगठित प्रणाली लाखों लोगों की दैनिक जरूरतों को पूरा कर सकती है।

अंततः, मुंबई का यह रेल नेटवर्क भारत की प्रगति और शहरी जीवन की जटिलताओं का एक जीवंत उदाहरण है। बढ़ती जनसंख्या और यात्रा की मांग के बीच यह व्यवस्था लगातार खुद को अपडेट कर रही है। यह कहना गलत नहीं होगा कि मध्य रेलवे का यह संचालन न केवल तकनीकी उपलब्धि है, बल्कि एक ऐसा प्रबंधन मॉडल भी है, जो पूरे देश के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकता है।

असम में भाजपा की हैट्रिक, प्रचंड बहुमत के साथ सत्ता पर मजबूत पकड़

गुवाहाटी। पूर्वोत्तर भारत की राजनीति में एक बार फिर बड़ा जनादेश सामने आया है, जहां 126 सदस्यीय असम विधानसभा में भारतीय जनता पार्टी ने लगातार तीसरी बार स्पष्ट बहुमत हासिल करते हुए अपनी राजनीतिक पकड़ को और मजबूत कर लिया है। इस चुनावी परिणाम को न केवल राज्य की राजनीति में स्थिरता के संकेत के रूप में देखा जा रहा है, बल्कि इसे भाजपा के संगठनात्मक विस्तार और जनाधार की मजबूती का प्रमाण भी माना जा रहा है।

ताजा परिणामों के अनुसार भाजपा ने 102 सीटें जीतकर स्पष्ट बहुमत प्राप्त किया है, जो राज्य की कुल सीटों का बड़ा हिस्सा है। दूसरी ओर, कांग्रेस 21 सीटों के साथ मुख्य विपक्षी दल के रूप में उभरी है। इसके अलावा क्षेत्रीय दलों में बोडोलैंड पीपुल्स फ्रंट और असम गण परिषद को 10-10 सीटें मिली हैं, जबकि एआईयूडीएफ केवल 2 सीटों तक सीमित रह गई।

इस चुनावी जीत का सबसे बड़ा आकर्षण मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा की व्यक्तिगत सफलता रही, जिन्होंने लगातार छठी बार जालुकबारी विधानसभा सीट पर जीत दर्ज की है। उन्होंने कांग्रेस उम्मीदवार बिदिशा नियोग को 89,434 वोटों के बड़े अंतर से हराया। यह जीत न केवल उनकी व्यक्तिगत लोकप्रियता

को दर्शाती है, बल्कि राज्य में उनके नेतृत्व के प्रति जनता के विश्वास को भी स्पष्ट करती है। हिमंत बिस्व सरमा की पिछली जीत का अंतर भी काफी बड़ा था, जब 2021 में उन्होंने मुख्यमंत्री पद संभालते समय लगभग 1,01,000 वोटों के अंतर से जीत हासिल की थी। इस बार का परिणाम भले ही थोड़ा कम अंतर का हो, लेकिन उनकी लगातार जीत यह दिखाती है कि जालुकबारी सीट पर उनका प्रभाव बेहद मजबूत बना हुआ है।

चुनाव परिणामों के बाद मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने कांग्रेस पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि चुनाव से पहले पार्टी नेताओं द्वारा उनकी पत्नी पर लगाए गए आरोपों ने जनता की भावनाओं को आहत किया। उन्होंने कहा कि यह केवल एक राजनीतिक हमला नहीं था, बल्कि एक असमिया महिला को बदनाम करने की कोशिश थी, जिसे जनता ने स्वीकार नहीं किया।

सरमा ने यह भी कहा कि कांग्रेस नेता पवन खेड़ा द्वारा लगाए गए आरोप और उस दौरान राज्य कांग्रेस अध्यक्ष गौरव गोगोई का उनके साथ मंच साझा करना, पार्टी के खिलाफ जनता की नाराजगी का एक बड़ा कारण बन सकता है। उनके अनुसार, इस प्रकार की राजनीति ने कांग्रेस की स्थिति को और कमजोर कर दिया।

इस जीत को भाजपा के लिए पूर्वोत्तर भारत में एक मजबूत राजनीतिक संदेश के रूप में देखा जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों में पार्टी ने इस क्षेत्र में अपने संगठन को काफी मजबूत किया है और विकास योजनाओं को भी तेज गति से लागू किया है। बुनियादी ढांचे, सड़क, स्वास्थ्य और कनेक्टिविटी जैसे क्षेत्रों में किए गए कार्यों को भी इस जनादेश से जोड़कर देखा जा रहा है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि असम में भाजपा की लगातार तीसरी जीत यह संकेत देती है कि राज्य की राजनीति में स्थिरता और विकास के मुद्दों को प्राथमिकता दी जा रही है। इसके साथ ही क्षेत्रीय दलों की भूमिका भी महत्वपूर्ण बनी हुई है, जो सरकार गठन और नीति निर्धारण में सहयोगी भूमिका निभाते हैं।

हालांकि, विपक्ष के लिए यह परिणाम एक बड़ा झटका माना जा रहा है। कांग्रेस की सीटों में अपेक्षित वृद्धि न होना और क्षेत्रीय दलों का सीमित प्रदर्शन यह दर्शाता है कि विपक्षी गठबंधन को अभी और मजबूत रणनीति की आवश्यकता है। कुल मिलाकर, असम का यह चुनाव परिणाम न केवल एक राजनीतिक जीत है, बल्कि यह इस बात का भी संकेत है कि राज्य की जनता ने एक बार फिर स्थिर नेतृत्व और विकास की दिशा में मतदान किया है।

एसिड हमलों पर सख्त रुख: सुप्रीम कोर्ट के संकेत और न्याय व्यवस्था की नई दिशा

नई दिल्ली। देश में बढ़ते एसिड हमलों को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने गंभीर चिंता जताते हुए स्पष्ट संकेत दिया है कि अब इस जघन्य अपराध के प्रति कानून और व्यवस्था दोनों को और कठोर बनाना होगा। शीर्ष अदालत की टिप्पणी केवल एक न्यायिक प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि समाज के सामने खड़े एक गहरे संकट की ओर इशारा है, जहां महिलाओं और कमजोर वर्गों के खिलाफ हिंसा का यह रूप लगातार भयावह होता जा रहा है। मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची की पीठ ने केंद्र सरकार को सुझाव दिया कि एसिड हमलों के मामलों में सजा को और सख्त बनाने पर विचार किया जाए। अदालत ने यह भी कहा कि ऐसे मामलों में दोष साबित करने का बोझ केवल पीड़ित पर नहीं होना चाहिए, बल्कि आरोपी पर भी जिम्मेदारी डाली जानी चाहिए। यह विचार भारतीय आपराधिक न्याय प्रणाली में एक महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत देता है, जहां अब पीड़ित के बजाय आरोपी को अपनी बेगुनाही साबित करनी पड़ सकती है।

इस मामले की सुनवाई एसिड अटैक पीड़िता शाहीन मलिक द्वारा दायर जनहित याचिका पर हो रही थी। याचिका में मांग की गई थी कि एसिड हमले के शिकार लोगों को विकलांग व्यक्तियों के रूप में मान्यता दी जाए, ताकि वे सरकारी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठा सकें। अदालत ने इस मांग को गंभीरता से लेते हुए महत्वपूर्ण निर्देश दिए कि जिन लोगों को जबरन एसिड पिलाया गया है या जिनके आंतरिक अंगों को नुकसान पहुंचा है, भले ही बाहरी रूप से विकृति न दिखे, उन्हें भी विकलांग व्यक्ति अधिकार अधिनियम, 2016 के

तहत एसिड अटैक पीड़ित माना जाएगा। यह निर्णय अपने आप में एक बड़ा कदम है, क्योंकि अब तक कई ऐसे मामले सामने आते रहे हैं, जहां पीड़ितों को केवल बाहरी चोटों के आधार पर ही सहायता मिलती थी, जबकि आंतरिक क्षति को नजरअंदाज कर दिया जाता था। सुप्रीम कोर्ट ने स्पष्ट किया कि यह व्याख्या 2016 के अधिनियम के लागू होने के समय से ही प्रभावी मानी जाएगी, जिससे हजारों पीड़ितों को पीछे की तारीख से भी लाभ मिल सकता है।

अदालत ने यह भी कहा कि मौजूदा सजा इस अपराध को रोकने में प्रभावी साबित नहीं हो रही है। मुख्य न्यायाधीश ने टिप्पणी की कि 2013 के बाद से ऐसे मामलों में वृद्धि हुई है, जो चिंता का विषय है। उन्होंने यह सवाल भी उठाया कि क्या वर्तमान कानून इतने कठोर हैं कि अपराधियों में डर पैदा कर सकें। इस संदर्भ में अदालत ने सरकार से आग्रह किया कि वह सजा को और कड़ा करने पर गंभीरता से विचार करे, ताकि यह एक वास्तविक निवारक (deterrent) के रूप में काम कर सके।

सुनवाई के दौरान एक और महत्वपूर्ण सुझाव सामने आया, जिसमें कहा गया कि दोषी पाए गए व्यक्तियों की संपत्ति जब्त की जानी चाहिए। इसका उद्देश्य यह है कि पीड़ितों को उचित मुआवजा मिल सके और उन्हें इलाज, पुनर्वास तथा जीवन पुनर्निर्माण के लिए आर्थिक सहायता प्राप्त हो सके। यह प्रस्ताव न केवल न्याय की भावना को मजबूत करता है, बल्कि यह सुनिश्चित करता है कि अपराधी अपने कृत्य की वास्तविक कीमत चुकाएं।

इसके अलावा, अदालत ने बाजार में एसिड की खुलेआम बिक्री पर भी चिंता जताई। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि जब तक एसिड की उपलब्धता को नियंत्रित नहीं किया जाएगा, तब तक इस प्रकार के अपराधों पर पूरी तरह रोक लगाना मुश्किल होगा। अदालत ने सरकार से सख्त नियम लागू करने और उनके प्रभावी क्रियान्वयन पर जोर दिया, ताकि आम लोगों की पहुंच से ऐसे खतरनाक पदार्थों को सीमित किया जा सके। इस पूरे घटनाक्रम ने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि एसिड हमला केवल एक आपराधिक कृत्य नहीं, बल्कि मानवता के खिलाफ अपराध है। यह पीड़ित के शरीर ही नहीं, बल्कि उसकी आत्मा और सामाजिक जीवन को भी गहराई से प्रभावित करता है। ऐसे में न्याय व्यवस्था की जिम्मेदारी केवल अपराधी को सजा देने तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि पीड़ित को सम्मानजनक जीवन वापस दिलाने की दिशा में भी काम करना आवश्यक है। सुप्रीम कोर्ट की यह पहल न केवल कानूनी सुधार की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, बल्कि यह समाज के लिए भी एक चेतावनी है कि अब इस तरह के अपराधों को किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यदि सरकार और समाज मिलकर इन सुझावों को लागू करते हैं, तो यह उम्मीद की जा सकती है कि आने वाले समय में एसिड हमलों जैसी घटनाओं में कमी आएगी और पीड़ितों को न्याय के साथ-साथ सम्मानजनक जीवन जीने का अवसर भी मिलेगा।

संपादकीय

किराये की संतान

जीवन की ढलती शाम में जब सूरज की रोशनी धीरे-धीरे धुंधली पड़ने लगती है, तब इंसान को सबसे ज्यादा जरूरत होती है अपनेपन की, किसी के साथ बैठकर दो शब्द बोलने की, और उस एहसास की कि वह अकेला नहीं है। लेकिन आधुनिक समय की सच्चाई कुछ और ही कहानी कहती है। आज के तेज़ भागते जीवन में बुजुर्गों के हिस्से में अक्सर सन्नाटा, उपेक्षा और भीतर तक चुभने वाला अकेलापन आता है। जिन लोगों ने अपने पूरे जीवन को परिवार के लिए समर्पित कर दिया, वही लोग अपने अंतिम वर्षों में भावनात्मक खालीपन से जूझते नजर आते हैं।

समाज में तेजी से हो रहे बदलावों ने पारिवारिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। बेहतर शिक्षा, रोजगार और जीवन स्तर की तलाश में नई पीढ़ी बड़े शहरों या विदेशों की ओर निकल जाती है। शुरुआत में यह दूरी केवल भौगोलिक होती है, लेकिन धीरे-धीरे यह भावनात्मक दूरी में भी बदल जाती है। माता-पिता अपने बच्चों की सफलता पर गर्व तो करते हैं, लेकिन उनके बिना घर की खामोशी उन्हें अंदर ही अंदर तोड़ने लगती है। जिन घरों में कभी बच्चों की हंसी गूंजती थी, वहां अब केवल घड़ी की टिक-टिक सुनाई देती है। इसी बदलते परिदृश्य में "किराये की संतान" जैसी अवधारणा सामने आई है, जो अपने आप में समाज की एक गहरी विडंबना को दर्शाती है। कुछ निजी कंपनियां बुजुर्गों को ऐसे लोगों की सेवाएं उपलब्ध कराती हैं, जो उनके साथ समय बिताते हैं, उनसे बातचीत करते हैं, उनके साथ टहलने जाते हैं या साधारण खेल खेलते हैं। यह व्यवस्था भले ही कृत्रिम लगे, लेकिन अकेलेपन से जूझ रहे बुजुर्गों के लिए यह एक अस्थायी सहारा बन जाती है। कुछ घंटों के लिए ही सही, उन्हें यह महसूस होता है कि कोई उनके साथ है, उनकी बात सुनने वाला है।

लेकिन यह समाधान हर किसी के लिए उपलब्ध नहीं है। आर्थिक रूप से कमजोर या सीमित आय वाले बुजुर्गों के लिए यह सुविधा एक अतिरिक्त बोझ बन जाती है। खासकर निजी क्षेत्र से सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए, जिनकी पेंशन सीमित होती है और जिनके सामने रोजमर्रा के खर्चों के साथ-साथ महंगी चिकित्सा सेवाओं का दबाव भी होता है। ऐसे में उनका जीवन और अधिक कठिन और चिंताजनक हो जाता है। भविष्य की अनिश्चितता और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उन्हें मानसिक रूप से भी कमजोर कर देती हैं।

अगर वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखा जाए, तो कई विकसित देशों में बुजुर्गों के लिए मजबूत सामाजिक सुरक्षा प्रणाली मौजूद है। वहां सरकारें सेवानिवृत्त लोगों के लिए स्वास्थ्य सेवाएं, आवास और आर्थिक सहायता सुनिश्चित करती हैं। इसके विपरीत भारत में अभी इस दिशा में काफी सुधार की आवश्यकता है। यहां बुजुर्गों की देखभाल का दायित्व मुख्यतः परिवार पर ही निर्भर करता है, और जब परिवार साथ नहीं होता, तो उनकी स्थिति और अधिक दयनीय हो जाती है। इस चुनौतीपूर्ण स्थिति में बुजुर्गों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वे खुद को मानसिक और शारीरिक रूप से सक्रिय बनाए रखें। योग, प्राणायाम और ध्यान जैसे अभ्यास न केवल उनके स्वास्थ्य को बेहतर बनाते हैं, बल्कि उन्हें आंतरिक शांति भी प्रदान करते हैं। इसके अलावा, सामाजिक गतिविधियों, धार्मिक आयोजनों और सत्संग में भाग लेना उनके जीवन में नई ऊर्जा और सकारात्मकता ला सकता है। जब व्यक्ति अपने भीतर संतुलन और संतोष विकसित करता है, तो बाहरी परिस्थितियों का प्रभाव कुछ हद तक कम हो जाता है।

समाज और सरकार की भूमिका भी इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। आवश्यकता है कि ऐसे वृद्धाश्रम विकसित किए जाएं, जो केवल रहने की सुविधा ही नहीं, बल्कि एक सम्मानजनक और सक्रिय जीवन का वातावरण भी प्रदान करें। इसके साथ ही एक अभिनव विचार यह भी है कि अनाथ बच्चों और बुजुर्गों को एक ही स्थान पर रखा जाए। इससे दोनों वर्गों की भावनात्मक जरूरतें पूरी हो सकती हैं। बच्चों को जहां स्नेह और मार्गदर्शन मिलेगा, वहीं बुजुर्गों को अपनेपन का एहसास होगा। अंततः, यह समझना जरूरी है कि तकनीकी या व्यावसायिक समाधान कभी भी पारिवारिक रिश्तों की जगह नहीं ले सकते। खून के रिश्तों में जो गर्माहट और सच्चाई होती है, वह किसी भी कृत्रिम व्यवस्था में संभव नहीं है। इसलिए नई पीढ़ी को यह समझना होगा कि जीवन की भागदौड़ में अपने माता-पिता को नजरअंदाज करना केवल एक व्यक्तिगत गलती नहीं, बल्कि एक सामाजिक समस्या भी है। जीवन की सांझ को सुंदर बनाने के लिए जरूरी है कि हम अपने बुजुर्गों को समय दें, उन्हें समझें और उनके अनुभवों का सम्मान करें। क्योंकि अंततः यही वह निवेश है, जो हमें भी हमारे बुढ़ापे में सुकून और सहारा देगा।

5'M' के जरिए प्लान-A हुआ मुकम्मल, अब प्लान-B में बंगाल में BJP कौन से 5 बड़े काम करने वाली है?

> पार्टी ने जीत का ब्लूप्रिंट बहुत पहले ही तैयार कर लिया था। सत्ता के शिखर तक पहुंचने का उनका 'प्लान-A' तो अब मुकम्मल हो चुका है, लेकिन असली काम अब शुरू होता है। अब नजरें बीजेपी के 'प्लान-B' पर टिकी हैं। यानी वह रोडमैप, जिसके जरिए बंगाल की खोई हुई अस्मिता, सांस्कृतिक साख और औद्योगिक पहचान को दोबारा वापस लाने का खाका खींचा गया है।

बंगाल के इस चुनावी महासमर की असली दास्तान महज़ हार-जीत के आंकड़ों में नहीं, बल्कि 'M फैक्टर' के इर्द-गिर्द बुनी गई। राजनीति अब केवल ध्रुवीकरण या विकास के वादों के पुराने चश्मे से नहीं देखी जा रही। आइए डिकोड करते हैं कि आखिर ये 5 'M' कैसे तय कर रहे हैं बंगाल की सियासत की नई दिशा और दशा। बंगाल की सियासत में एक बड़े युग का बदलाव हुआ है। पूरे 15 साल तक सत्ता के शिखर पर काबिज रही टीएमसी सरकार को बेदखल कर बीजेपी ने एक नया इतिहास रच दिया है। इस महाविजय के पीछे सिर्फ चुनावी हवा का रुख नहीं, बल्कि एक बेहद सधी हुई बिसात थी। पार्टी ने जीत का ब्लूप्रिंट बहुत पहले ही तैयार कर लिया था। सत्ता के शिखर तक पहुंचने का उनका 'प्लान-A' तो अब मुकम्मल हो चुका है, लेकिन असली काम अब शुरू होता है। अब नजरें बीजेपी के 'प्लान-B' पर टिकी हैं। यानी वह रोडमैप, जिसके जरिए बंगाल की खोई हुई अस्मिता, सांस्कृतिक साख और औद्योगिक पहचान को दोबारा वापस लाने का खाका खींचा गया है।

मुस्लिम फैक्टर

पश्चिम बंगाल की राजनीति में 30% मुस्लिम आबादी वह 'M' फैक्टर है, जो किसी भी दल को सत्ता के शिखर पर पहुंचा सकता है। पारंपरिक तौर पर यह टीएमसी का पक्का वोट बैंक रहा है। लेकिन इस चुनाव में टीएमसी के इस वोट बैंक पर दोहरी मार पड़ी। पहला झटका हुमायूं कबीर ने दिया, जिन्होंने अपनी नई आम जनता उन्नयन पार्टी (AJUP) के जरिए मुस्लिम वोटों में बड़ी सेंध लगाई। रही-सही कसर बीजेपी की आक्रामक ध्रुवीकरण की राजनीति ने पूरी कर दी, जिसने इस 'M' फैक्टर के इर्द-गिर्द एकदम नए और चौंकाने वाले सियासी समीकरण गढ़ दिए।

महिला वोटर्स

बंगाल की सियासत में इस बार महिलाओं ने ही 'किंगमेकर' की कमान संभाल ली है। टीएमसी के लिए

'लक्ष्मी भंडार' जैसी योजनाएं महिलाओं को लुभाने का सबसे बड़ा ट्रंप कार्ड रहीं। लेकिन बीजेपी ने भी इस मोर्चे पर कड़ी घेराबंदी की। मोदी सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के अलावा, बीजेपी का सीधा वार महिला सुरक्षा के मुद्दे पर था। संदेशखाली की घटना हो या आरजी कर का खौफनाक कांड—बीजेपी ने इन्हें महिला सम्मान का ज्वलंत मुद्दा बनाकर ममता सरकार के खिलाफ एक मजबूत नैरेटिव सेट कर दिया। इसी आधी आबादी को अपने पाले में करने की इस होड़ ने बंगाल के पूरे चुनावी समीकरण को बदलकर रख दिया है।

माइग्रेंट

इस बार बंगाल चुनाव में हार-जीत की एक बड़ी चाबी उन लाखों प्रवासी मज़दूरों के हाथ में भी रही, जो अक्सर चुनाव के दिन अपने घरों से दूर रहते हैं। रोज़गार के अभाव में पलायन कर चुके इन युवाओं और उनके परिवारों ने इस बार वोट डालने के लिए जिस तरह बंगाल का रुख किया, उसने सारे समीकरण बदल दिए। इसका असर इतना व्यापक था कि दिल्ली-एनसीआर और ख़ासकर नोएडा की रिहायशी सोसाइटियों में बंगाली कामगारों के छुट्टी पर जाने से कामकाज ठप पड़ गया। मज़दूरों की यह वापसी चुनाव में एक बड़ा नैरेटिव बन गई। वोट की इस अहमियत को समझते हुए बीजेपी ने इन प्रवासियों को 'सोनार बांग्ला' का विज़न दिखाकर राज्य में ही रोज़गार देने का वादा किया। इसके विपरीत, ममता सरकार ने आक्रामक रुख अपनाते हुए मज़दूरों की इस स्थिति के लिए सीधे तौर पर मोदी सरकार की नीतियों और वित्तीय असहयोग को ज़िम्मेदार ठहराया।

मतुआ

उत्तर 24 परगना और उसके सीमावर्ती इलाकों में सत्ता का रास्ता सीधे मतुआ समुदाय के दरवाज़े से होकर गुज़रता है। नागरिकता कानून (CAA) की मांग इस समुदाय की सबसे बड़ी धुरी है, जिसके इर्द-गिर्द बीजेपी की पूरी राजनीति घूमती है। इस बार भी बीजेपी का पूरा ज़ोर सीएए के ज़रिए अपने इस पारंपरिक और निर्णायक वोट बैंक को एकजुट रखने पर रहा। लेकिन टीएमसी ने इस बार पूरी बिसात बदल दी। सीएए के राष्ट्रीय मुद्दे को कमज़ोर करने के लिए टीएमसी ने बहुत सधी हुई चाल चली और 'लोकल मुद्दों' के साथ-साथ ज़मीनी स्तर पर जनता के भरोसे को अपना सबसे बड़ा हथियार बनाया। इसी स्थानीय रणनीति ने मतुआ बहुल इलाकों की चुनावी लड़ाई को बेहद दिलचस्प बना दिया है।

मोदी फैक्टर

बंगाल फतह के लिए बीजेपी का सबसे बड़ा हथियार 'मोदी फैक्टर' ही साबित हुआ। पीएम मोदी की रैलियों का आक्रामक रुख, केंद्रीय योजनाओं का रिपोर्ट कार्ड और राष्ट्रीय विमर्श ने पूरी पार्टी को नए जोश से भर दिया। मोदी की व्यापक स्वीकार्यता ने नए वोटर्स को बड़ी तादाद में पार्टी से जोड़ा। ज़मीन पर जनता से सीधे कनेक्ट होने की पीएम की इस कला का एक यादगार पल झाड़ग्राम में सामने आया। जब अपने मेगा रोडशो के बीच पीएम मोदी एक आम बंगाली की तरह सड़क किनारे 'झालमुड़ी' का लुत्फ़ उठाते दिखे, तो इस दृश्य ने साबित कर दिया कि चुनाव जीतने के लिए महज़ वादे नहीं, बल्कि जनता के साथ ज़मीनी और सांस्कृतिक जुड़ाव भी उतना ही ज़रूरी है।

बंगाल के लिए बीजेपी का प्लान B

रोजगार, निवेश और 'सोनार बांग्ला'

बंगाल की चुनावी बिसात पर इस बार सिर्फ नारों की गूंज नहीं है, बल्कि एक ठोस आर्थिक रोडमैप पेश करने की होड़ है। बीजेपी ने राज्य की जर्जर हो चुकी औद्योगिक साख को फिर से खड़ा करने के लिए कई अहम दांव चले हैं:

जूट उद्योग का 'पुनर्जागरण'

बंगाल की पहचान और कभी रोजगार का सबसे बड़ा इंजन रहा जूट उद्योग, बीजेपी के मुख्य एजेंडे में है। दशकों से जंग खा रही और बंद पड़ी जूट मिलों के ताले खोलने का वादा किया गया है। योजना महज इन्हें चालू करने की नहीं है, बल्कि तकनीकी मदद और पूंजी के जरिए इन्हें 'हाईटेक' बनाने की है, ताकि युवाओं के लिए फिर से बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा हो सके।

2. युवाओं को 'जॉब क्रिएटर' बनाने की पहल

लघु और मध्यम उद्योगों (MSME) में नई जान फूंकने के लिए राज्य में एक विशेष निगम बनाने की तैयारी है। इसके तहत 'लोकल मैन्युफैक्चरिंग' को बढ़ावा देने और युवाओं को उद्यमी बनाने के लिए 10 लाख रुपये तक की आर्थिक मदद (जिसमें ग्रांट और ब्याज-मुक्त लोन शामिल है) का प्रस्ताव रखा गया है।

3. 'ग्रेटर कोलकाता' और वर्ल्ड-क्लास इंफ्रास्ट्रक्चर

पार्टी के 'सोनार बांग्ला' विजन का सबसे बड़ा हिस्सा है। कोलकाता और उसके आसपास के उपनगरों को मिलाकर एक 'ग्लोबल इंडस्ट्रियल हब' तैयार करना। इसके लिए लॉजिस्टिक खर्च को कम करने और निर्यात को रफ्तार देने पर फोकस है। हल्दिया पोर्ट का आधुनिकीकरण, नए डीप-सी पोर्ट का निर्माण और बेहतरीन रेल-सड़क नेटवर्क बिछाना इस रणनीति का मुख्य हिस्सा है।

4. सिंगूर का नया अध्याय: विशेष औद्योगिक जोन

उद्योग के नाम पर सियासत का केंद्र रहे सिंगूर जैसे इलाकों की तस्वीर बदलने के लिए 'डेडिकेटेड इंडस्ट्रियल पार्क' बनाने का वादा है। इन पार्कों का खाका इस तरह तैयार किया गया है कि एक हिस्सा भारी उद्योगों के लिए और दूसरा हिस्सा MSME के लिए आरक्षित रहे, ताकि दोनों एक-दूसरे के पूरक बन सकें।

5. पलायन रोकना

पिछले 15 सालों में राज्य से उद्योगों के पलायन को रोकने के लिए बीजेपी ने लाल फीताशाही को खत्म कर निवेशकों के लिए 'रेड कार्पेट' बिछाने का भरोसा दिया है। 'सिंगल विंडो क्लीयरेंस', पारदर्शी प्रशासन और स्थिर नीतियों के जरिए प्राइवेट सेक्टर का खोया हुआ विश्वास वापस लाने की योजना है। इसके अलावा, राज्य को भविष्य की अर्थव्यवस्था के लिए तैयार करने के वास्ते आईटी (आईटी) और सेमीकंडक्टर जैसे आधुनिक सेक्टर्स पर भी खास दांव खेला गया है।

प्रेरणा

जीवन का वास्तविक मूल्य

मनुष्य का जीवन केवल वर्षों की संख्या से नहीं, बल्कि उन वर्षों की गुणवत्ता और उनके भीतर समाहित उद्देश्य से मापा जाता है। अक्सर हम उम्र को कैलेंडर के पन्नों से जोड़कर देखते हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि जीवन का वास्तविक अर्थ उन क्षणों में छिपा होता है, जब हम स्वयं को, अपने कर्तव्यों को और अपने अस्तित्व के उद्देश्य को समझते हैं। यही बात एक प्रेरणादायक कथा के माध्यम से स्पष्ट होती है, जिसमें एक वृद्ध किसान अपने जीवन के सच्चे वर्षों का अर्थ बताता है।

कहानी में एक न्यायप्रिय राजा भेष बदलकर अपने राज्य का हाल जानने निकलता है। रास्ते में उसे एक वृद्ध किसान मिलता है, जो शारीरिक रूप से बूढ़ा दिखता है, लेकिन उसके भीतर एक अद्भुत ऊर्जा और उत्साह झलकता है। जब राजा उससे उसकी उम्र पूछता है, तो वह आश्चर्यजनक उत्तर देता है—'चार वर्ष'। यह उत्तर सामान्य समझ के विपरीत था, क्योंकि वह व्यक्ति स्पष्ट रूप से अस्सी वर्ष का प्रतीत हो रहा था। राजा के पुनः पूछने और स्वयं की पहचान बताने पर भी जब किसान अपने उत्तर पर अडिग रहता है, तब वह अपने जीवन का गहरा दर्शन प्रकट करता है।

वृद्ध किसान का कहना था कि उसने अपने जीवन के अधिकांश वर्ष सांसारिक कार्यों में बिताए—धन कमाने, परिवार का पालन-पोषण करने और सामाजिक जिम्मेदारियों को निभाने में। ये सभी कार्य आवश्यक तो हैं, लेकिन वे केवल जीवन को चलाने के साधन हैं, जीवन का उद्देश्य नहीं। किसान के अनुसार, यह जीवन तो पशु भी किसी न किसी रूप में जीते हैं—भोजन की तलाश, परिवार की रक्षा और अपने अस्तित्व को बनाए रखना। मनुष्य को जो विशेष बनाता है, वह है उसका विवेक, उसका आत्मचिंतन और उसका आध्यात्मिक विकास।

वृद्ध ने बताया कि पिछले चार वर्षों से उसने अपने जीवन की दिशा बदली है। उसने ईश्वर-भक्ति, सेवा, दया और सदाचार को अपने जीवन का आधार बनाया है। अब वह केवल अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों के लिए जी रहा है। उसने अपने भीतर करुणा, विनम्रता और सच्चाई को स्थान दिया है। यही वह समय है, जिसे वह अपने जीवन के "सच्चे वर्ष" मानता है। इस दृष्टिकोण में गहरी सच्चाई छिपी है—जीवन तब सार्थक होता है, जब उसमें आत्मिक उन्नति और दूसरों के प्रति समर्पण का भाव हो।

आज के आधुनिक समाज में, जहां सफलता को केवल धन, पद और भौतिक उपलब्धियों से मापा जाता है, यह कथा हमें एक अलग दिशा में सोचने के लिए प्रेरित करती है। हम अपने जीवन का अधिकांश समय भागदौड़ में बिताते हैं—बेहतर करियर, अधिक आय और सामाजिक प्रतिष्ठा की तलाश में। इस प्रक्रिया में हम अक्सर अपने भीतर की शांति, संतोष और मानवीय मूल्यों को नजरअंदाज कर देते हैं। परिणामस्वरूप, जीवन के अंत में हमें यह महसूस होता है कि हमने बहुत कुछ पाया, लेकिन फिर भी कुछ महत्वपूर्ण छूट गया।

यह कहानी हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि क्या हम वास्तव में जी रहे हैं, या केवल जीवन के दायित्वों को निभा रहे हैं। क्या हमने कभी अपने भीतर झांककर यह समझने की कोशिश की है कि हमारा वास्तविक उद्देश्य क्या है? क्या हम अपने समय का कुछ हिस्सा दूसरों की भलाई, सेवा और आत्मिक विकास के लिए निकालते हैं? यदि नहीं, तो शायद हमें अपने जीवन की दिशा पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है।

जीवन का वास्तविक मूल्य तब समझ में आता है, जब हम अपने भीतर के परिवर्तन को महसूस करते हैं। यह परिवर्तन बाहरी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि आंतरिक शांति और संतोष से आता है। जब हम किसी जरूरतमंद की मदद करते हैं, किसी दुखी व्यक्ति को सहारा देते हैं या बिना किसी स्वार्थ के किसी के चेहरे पर मुस्कान लाने का प्रयास करते हैं, तब हमें एक अलग प्रकार की खुशी का अनुभव होता है। यही वह क्षण होते हैं, जो हमारे जीवन को सच्चा अर्थ देते हैं। इस संदर्भ में यह भी महत्वपूर्ण है कि हम अपने जीवन के हर चरण को संतुलित रूप से जिएं। सांसारिक जिम्मेदारियों से भागना समाधान नहीं है, लेकिन उनके साथ-साथ आत्मिक विकास पर ध्यान देना आवश्यक है। यदि हम अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों से ही सेवा, दया और सदाचार को अपनाएं, तो हमें अपने जीवन के अंत में यह महसूस नहीं होगा कि हमने "सच्चा जीवन" देर से शुरू किया।

वृद्ध किसान की सोच हमें यह भी सिखाती है कि परिवर्तन के लिए कभी देर नहीं होती। चाहे हम जीवन के किसी भी चरण में हों, यदि हम चाहें तो अपनी दिशा बदल सकते हैं। हम अपने जीवन को अधिक सार्थक, अधिक मानवीय और अधिक आध्यात्मिक बना सकते हैं। इसके लिए केवल एक दृढ़ संकल्प और सही दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

अंततः, यह कहानी हमें यह संदेश देती है कि जीवन की लंबाई से अधिक उसकी गहराई महत्वपूर्ण है। यदि हम अपने जीवन को केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित रखते हैं, तो हम उसके वास्तविक आनंद से वंचित रह जाते हैं। लेकिन यदि हम उसमें सेवा, प्रेम, करुणा और आध्यात्मिकता को शामिल करते हैं, तो हमारा हर वर्ष "सच्चा वर्ष" बन सकता है।

इसलिए, हमें अपने जीवन के हर दिन को इस तरह जीने का प्रयास करना चाहिए कि वह केवल बीते हुए समय का हिस्सा न बने, बल्कि हमारे व्यक्तित्व और हमारे समाज के लिए एक सकारात्मक योगदान बन सके। यही सच्चे जीवन की पहचान है और यही वह मार्ग है, जो हमें वास्तविक संतोष और खुशी की ओर ले जाता है।

बंगाल चुनाव के सियासी दांवपेच में एसआईआर की भूमिका

पंजाब से लेकर बंगाल तक, देश के दो छोर पर बसे इन दोनों राज्यों की राजनीति में खास तरह की गरमाहट साफ़ दिखाई दे रही है। पंजाब में, सत्ताधारी आम आदमी पार्टी को उम्मीद थी कि वह मई दिवस का इस्तेमाल संकट के संकेत के बजाय (मूलतः फ्रांसीसी वाक्यांश (m'aider) 'मे-डे', यानी 'मदद करना') यह दिखाने में कर सकेगी कि पार्टी के कुछ लोगों द्वारा पाला बदल लेने के बावजूद, दल पूरी तरह एकजुट है।

लेकिन हुआ यह कि मई दिवस पर मज़दूरों के अधिकारों संबंधी अवसर मनाने के लिए बुलाया गया विधानसभा का विशेष सत्र, राजनीतिक वाक्युद्ध की भेंट चढ़ गया। सदन की कार्रवाई कुछ देर के लिए स्थगित करनी पड़ी और विपक्ष को सत्ताधारी पार्टी पर यह आरोप लगाने का मौका मिल गया कि वह 'पानी को शराब में बदलने' (यानी, अच्छी चीज़ को खराब वस्तु में बदल देने) का काम कर रही है।

यह घटना पंजाब की पहले से ही गंदली हुई पड़ी राजनीति को और कितना मैला करेगी? एक ही झटके में, भाजपा को सात नए राज्यसभा सांसद मिल गए हैं, क्योंकि पिछले हफ़्ते आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसदों का एक गुट टूटकर भाजपा में शामिल हो गया। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान जल्द ही राष्ट्रपति से मिलकर यह कहेंगे कि यह टूटन 'दल-बदल विरोधी कानून' का उल्लंघन है। फिर भी, इस झटके से बुरी तरह हिली हुई पार्टी आजकल अपनी ताकतों और कमजोरियों का आकलन कर रही है।

भले ही भाजपा में हाल ही में शामिल हुए ये सातों कोई जनाधार वाले नेता न हों- वास्तव में, यह धारणा बन जाना कि उन्होंने किसी डर या फायदे के लालच में 'आप' छोड़कर भाजपा का दामन थामा है, इसका लाभ आम आदमी पार्टी को मिलने की संभावना है -लेकिन यह सच है कि भाजपा ने पहला वार कर डाला है। मुकाबला शुरू हो चुका है। यह तब खत्म होगा, जब आज से दस महीने से भी कम समय बाद पंजाब में विधानसभा चुनाव के लिए मतदान होगा। वहीं देश के दूसरे छोर पर, आज बंगाल और बाकी देश को पता चल जाएगा कि हवा का रुख बदला है या नहीं। अधिकांश एग्जिट पोल पहले ही इस राज्य में भाजपा को जीत मिलने का अनुमान दिखा रहे हैं। लेकिन बंगाल की धरती पर कुछ और ही चल रहा है। सालों में पहली बार, लोकतंत्र के अध्ययन के लिए समर्पित भारत की सबसे बड़ी सामाजिक विज्ञान संस्था- 'सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवल्पिंग सोसाइटीज़'- और उसकी शोध शाखा 'लोकनीति' ने विधानसभा चुनावों के इस दौर में कोई भी चुनावी सर्वेक्षण नहीं किया। जाने-माने चुनाव विश्लेषक, एक्सिस माई इंडिया के प्रदीप गुप्ता ने यह कहते हुए कि राज्य के 70 प्रतिशत मतदाताओं ने उनके पोलिंग सर्वे में बात करने से मना कर दिया, बंगाल के लिए सीटों का अनुमान नहीं दिया है- हालांकि उन्होंने उन सभी दूसरे राज्यों के लिए अनुमान दिए हैं जहां पर चुनाव हुए हैं। इसी प्रकार सी-वोटर पोलिंग एजेंसी के प्रमुख, यशवंत देशमुख ने भी सीटों का अनुमान देने से मना करते हुए कहा कि अगर ममता बनर्जी की तृणमूल कांग्रेस कोलकाता और उसके आसपास के पांच मुख्य ज़िलों -कोलकाता, हावड़ा, 24 उत्तर परगना, 24 दक्षिण परगना और नदिया-पर अपना कब्ज़ा बनाए रखने में कामयाब रहती है, क्योंकि 294 सीटों वाली विधानसभा में इन ज़िलों की 108 सीटें हैं-तो वह अभी भी मुख्यमंत्री बनी रह सकती हैं।

सच तो यह है कि अगर भाजपा बंगाल जीत जाती है, तो वह उस इकलौते राज्य को जीतने का अपना पक्का इरादा साबित कर देगी जो अब तक उसके आकर्षण से बचा रहा- और यह जीत 'साम, दाम, दंड, भेद' और 'विशेष गहन पुनरीक्षण' के ज़रिए हासिल होगी। ऐसा करते हुए भाजपा ने निश्चित रूप से चाणक्य के उस विख्यात ग्रंथ में एक और तरीका जोड़ दिया है, जिसमें एक चतुर शासक द्वारा अपनी प्रजा को काबू में रखने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले चार तरीकों- हेरफेर, रिश्वत, दंड और फरेब- का ज़िक्र है; और यह नया तरीका है बंगाल में 'मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण' करवाना। इसका नतीज़ा यह रहा कि 'तार्किक विसंगति' वाले नियम के तहत 27 लाख मतदाताओं के नाम कट जाने के अलावा, हज़ारों लोगों के पास अपनी पात्रता सिद्ध करने का समय खत्म हो गया, क्योंकि उनके कागज़ात पूरे नहीं थे।

शायद राहुल गांधी को छोड़कर, जो 29 अप्रैल को बंगाल में 'करो या मरो' वाले मतदान के समय ग्रेट निकोबार द्वीप के जंगलों में घूम रहे थे या धर्मशाला की बारिश से भीगी पहाड़ियों की तारीफ़ कर रहे थे, अब हर राजनेता के मूल स्वभाव में पहली चार बातें (साम, दाम, दंड, भेद) पूरी तरह से रच-बस गई हैं। 'आप' के मनीष सिसोदिया ने पिछले अगस्त में ही ये नुक्ता बेझिझक बताया, जब उन्होंने कहा था कि पंजाब की लड़ाई में उनकी पार्टी इन तरीकों ('साम, दाम, दंड, भेद, सच, झूठ, सवाल, जवाब, लड़ाई-झगड़ा') का इस्तेमाल करने में गुरेज नहीं करेगी। पंजाब भाजपा के सुनील जाखड़ ने उस समय सिसोदिया की इस टिप्पणी पर चुनाव आयोग से शिकायत की थी -लेकिन दोनों नेताओं को निश्चित रूप से अपनी बात कहने का पूरा हक था; उनकी टिप्पणियां रोज़मर्रा की राजनीति की 'लक्ष्मण रेखा' के भीतर ही थीं।

बंगाल में, चुनावी प्रक्रिया में 'विशेष गहन पुनरीक्षण' को शामिल करना- जोकि सैद्धांतिक रूप से कोई गलत कदम नहीं था -एक निष्ठुरता में बदल गया, खासकर तब जब समय कम था और राज्य को डिजिटाइज़ करने की कोशिश में इंसानी हाथों से फार्म भरने में कई तरह की बेवकूफ़ी भरी गलतियां हुईं, जिनके नतीजे बहुत बुरे रहे। खैर, जो भी हो।

अभियान

मां वैष्णो देवी यात्रा: सरल योजना, सहज दर्शन और आध्यात्मिक अनुभव का विस्तृत मार्गदर्शन

भारत की धार्मिक परंपराओं में कुछ यात्राएं केवल आस्था का प्रतीक नहीं होतीं, बल्कि वे व्यक्ति के भीतर एक गहरी आध्यात्मिक जागृति भी उत्पन्न करती हैं। ऐसी ही एक यात्रा है वैष्णो देवी मंदिर की, जहां हर साल करोड़ों श्रद्धालु माता के दरबार में हाजिरी लगाने पहुंचते हैं। अगर आप पहली बार इस यात्रा का प्लान बना रहे हैं, तो यह जरूरी है कि आप इससे जुड़ी सभी महत्वपूर्ण जानकारी पहले से जान लें, ताकि आपकी यात्रा सहज, सुरक्षित और यादगार बन सके।

वैष्णो देवी का पवित्र धाम जम्मू-कश्मीर के त्रिकूट पर्वत पर स्थित है, जो समुद्र तल से लगभग 5200 फीट की ऊंचाई पर है। यात्रा का प्रारंभ कटरा से होता है, जो इस तीर्थ का बेस कैंप है। कटरा से माता के भवन तक लगभग 13 किलोमीटर की दूरी तय करनी होती है। यह दूरी सुनने में भले कठिन लगे, लेकिन श्रद्धालुओं की आस्था और रास्ते में मिलने वाली सुविधाएं इस सफर को अपेक्षाकृत आसान बना देती हैं।

पहले के समय में यह यात्रा काफी चुनौतीपूर्ण मानी जाती थी, लेकिन अब इसमें कई आधुनिक सुविधाएं जुड़ चुकी हैं। पूरे रास्ते को काफी हद तक समतल और सुरक्षित बना दिया गया है, जिससे बुजुर्गों, बच्चों और शारीरिक रूप से कमजोर लोगों के लिए भी यात्रा संभव हो गई है। मार्ग में जगह-जगह विश्राम स्थल, पीने के पानी की व्यवस्था, स्वच्छ शौचालय और शाकाहारी भोजन की उपलब्धता रहती है। यह सभी सुविधाएं 24 घंटे चालू रहती हैं, जिससे श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होती।

यदि आप पैदल यात्रा करने में असमर्थ हैं या कम समय में दर्शन करना चाहते हैं, तो इसके लिए भी कई विकल्प उपलब्ध हैं। कटरा से भवन तक पिट्ठू, घोड़े और पालकी की सेवाएं मिलती हैं। इसके अलावा हेलिकॉप्टर सेवा भी उपलब्ध है, जो कटरा से सांझी छत तक यात्रियों को ले जाती है। वहां से भवन की दूरी मात्र ढाई किलोमीटर रह जाती है, जिसे आराम से पैदल पूरा किया जा सकता है। यह विकल्प विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से जूझ रहे श्रद्धालुओं के लिए काफी लाभदायक है।

यात्रा के लिए सही समय का चुनाव करना भी बहुत महत्वपूर्ण है। हालांकि यह तीर्थ पूरे वर्ष खुला रहता है, लेकिन हर मौसम में यहां का अनुभव अलग होता है। मई-जून और नवरात्रि के समय यहां अत्यधिक भीड़ होती है, क्योंकि यह पीक सीजन होता है। यदि आप भीड़ से बचकर शांति से दर्शन करना चाहते हैं, तो फरवरी से अप्रैल या सितंबर से नवंबर के बीच का समय उपयुक्त माना जाता है। बरसात के मौसम में यात्रा करने से बचना चाहिए, क्योंकि इस दौरान फिसलन और भूस्खलन का खतरा बढ़ जाता है। वहीं दिसंबर और जनवरी में यहां कड़ाके की ठंड पड़ती है, इसलिए उस समय यात्रा करने वालों को विशेष तैयारी करनी चाहिए।

यात्रा की योजना बनाते समय वहां तक पहुंचने के साधनों की जानकारी होना भी आवश्यक है। हवाई मार्ग से आने वाले यात्रियों के लिए सबसे नजदीकी एयरपोर्ट जम्मू में स्थित है। यहां से कटरा लगभग 50 किलोमीटर दूर है, जहां तक टैक्सी या बस से आसानी से पहुंचा जा सकता है। रेल मार्ग से यात्रा करने वालों के लिए श्री माता वैष्णो देवी कटरा रेलवे स्टेशन एक सुविधाजनक विकल्प है, जो देश के कई प्रमुख शहरों से सीधा जुड़ा हुआ है। सड़क मार्ग से भी जम्मू और कटरा अच्छी तरह जुड़े हुए हैं, जिससे बस या निजी वाहन के माध्यम से यात्रा करना आसान होता है।

यात्रा के दौरान सही सामान साथ रखना बहुत जरूरी है। चूंकि कटरा और भवन के बीच ऊंचाई में अंतर है, इसलिए तापमान में भी बदलाव होता है। गर्मियों में हल्के कपड़े पहनना ठीक रहता है, लेकिन रात के समय हल्की ठंड के लिए एक जैकेट साथ रखना बेहतर होता है। सर्दियों में ऊनी कपड़े, दस्ताने और टोपी आवश्यक होते हैं। मानसून के दौरान यात्रा कर रहे हैं, तो छाता या रेनकोट जरूर रखें। सबसे महत्वपूर्ण है आरामदायक जूते पहनना, क्योंकि पूरी यात्रा में पैदल चलना पड़ता है और सही जूते आपकी यात्रा को आसान बना सकते हैं।

यात्रा से पहले पंजीकरण कराना अनिवार्य होता है, जिसे यात्रा पर्ची कहा जाता है। यह पर्ची ऑनलाइन या कटरा में स्थित काउंटर से प्राप्त की जा सकती है। बिना यात्रा पर्ची के आगे बढ़ने की अनुमति नहीं होती, इसलिए इसे पहले से प्राप्त कर लेना बेहतर होता है। इसके अलावा अपने साथ पहचान पत्र, मोबाइल फोन और आवश्यक दवाइयां रखना न भूलें।

इस यात्रा का सबसे विशेष पहलू केवल गंतव्य तक पहुंचना नहीं, बल्कि पूरे मार्ग का अनुभव है। रास्ते में "जय माता दी" के जयकारे, अन्य श्रद्धालुओं का उत्साह और सामूहिक आस्था का वातावरण एक अलग ही ऊर्जा प्रदान करता है। जब आप कठिन चढ़ाई के बाद माता के दरबार में पहुंचते हैं, तो वह क्षण जीवन के सबसे भावुक और संतोषजनक क्षणों में से एक बन जाता है। ऐसा लगता है कि सारी थकान और परेशानियां उसी पल समाप्त हो गई हैं।

आज के समय में, जब जीवन भागदौड़ और तनाव से भरा हुआ है, ऐसी यात्राएं हमें मानसिक शांति और आत्मिक संतुलन प्रदान करती हैं। वैष्णो देवी मंदिर की यात्रा केवल धार्मिक कर्तव्य नहीं, बल्कि आत्मा को शुद्ध करने और भीतर की ऊर्जा को जागृत करने का माध्यम भी है। यह हमें सिखाती है कि श्रद्धा और धैर्य के साथ हम किसी भी कठिनाई को पार कर सकते हैं।

अंततः, यदि आप इस पवित्र यात्रा का प्लान बना रहे हैं, तो इसे केवल एक टूर या छुट्टी की तरह न लें, बल्कि इसे एक आध्यात्मिक अनुभव के रूप में स्वीकार करें। सही जानकारी, उचित तैयारी और सच्ची श्रद्धा के साथ की गई यह यात्रा निश्चित रूप से आपके जीवन में एक नई ऊर्जा और सकारात्मकता का संचार करेगी। जब आप माता के दरबार में पहुंचकर उनके दर्शन करेंगे, तो आपको महसूस होगा कि यह केवल एक यात्रा नहीं थी, बल्कि एक दिव्य बुलावा था, जिसे आपने पूरे विश्वास और समर्पण के साथ पूरा किया। "जय माता दी" की गूंज के बीच यह अनुभव आपके जीवन में हमेशा के लिए बस जाएगा।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

सूरत में गूंजा विजय का शंखनाद: पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी की जीत पर भाजपा का भव्य जश्न

सूरत। देश की राजनीति में हाल ही में आए चुनावी नतीजों ने जहां पूर्वी और पूर्वोत्तर भारत के राजनीतिक परिदृश्य को नया आकार दिया है, वहीं इसका असर पश्चिम भारत के बड़े औद्योगिक और व्यापारिक केंद्र सूरत तक भी साफ दिखाई दिया। पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी में भारतीय जनता पार्टी और उसके सहयोगी दलों के बेहतर प्रदर्शन के बाद पूरे देश में पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच उत्साह का माहौल बन गया है। इसी कड़ी में गुजरात के सूरत शहर में स्थित कमलम कार्यालय पर एक भव्य और व्यापक स्तर का जश्न आयोजित किया गया, जिसमें हजारों कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया और जीत का उत्सव पूरे जोश और ऊर्जा के साथ मनाया।

यह आयोजन केवल एक औपचारिक राजनीतिक कार्यक्रम नहीं था, बल्कि यह एक ऐसा सामाजिक और संगठनात्मक प्रदर्शन था जिसमें पार्टी की जमीनी ताकत, कार्यकर्ताओं का समर्पण और विभिन्न समुदायों की भागीदारी एक साथ दिखाई दी। सुबह से ही कमलम कार्यालय परिसर में हलचल शुरू हो गई थी। जैसे-जैसे चुनावी परिणामों की पुष्टि होती गई, वैसे-वैसे कार्यकर्ताओं की भीड़ बढ़ती गई और शाम होते-होते पूरा परिसर उत्सव स्थल में बदल गया।

ढोल-नगाड़ों की गूंज, पटाखों की आवाज और लगातार लगाए जा रहे नारे वातावरण को पूरी तरह राजनीतिक उत्साह से भर रहे थे। "भारत माता की जय", "जय श्री राम" और "कमल खिल रहा है" जैसे नारों से पूरा परिसर गूंज उठा। कार्यकर्ताओं ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर और गुलाल लगाकर खुशी का इजहार किया। कई जगहों पर लोग नाचते-गाते नजर आए, जिससे माहौल किसी पारंपरिक उत्सव जैसा लग रहा था।

इस कार्यक्रम में सूरत भाजपा के कई वरिष्ठ नेता और पदाधिकारी मौजूद रहे। शहर अध्यक्ष परेशभाई पटेल ने मंच से कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि यह जीत केवल कुछ राज्यों की नहीं है, बल्कि यह पार्टी की नीतियों, संगठनात्मक शक्ति और जनता के विश्वास की जीत है। उन्होंने कहा कि भाजपा की सबसे बड़ी ताकत उसका कार्यकर्ता है, जो हर परिस्थिति में संगठन के साथ खड़ा रहता है।

सांसद मुकेशभाई दलाल ने भी इस अवसर

पर कार्यकर्ताओं को बधाई देते हुए कहा कि यह परिणाम आने वाले समय के लिए एक संकेत है कि जनता विकास और स्थिरता की राजनीति को प्राथमिकता दे रही है। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल जैसे लंबे समय से राजनीतिक रूप से जटिल राज्य में भाजपा की बढ़त यह साबित करती है कि पार्टी का जनाधार लगातार बढ़ रहा है।

कार्यक्रम में जनरल सेक्रेटरी करशनभाई गोंडालिया, दुर्गा प्रसाद पांडेय, विरलभाई गिलिटवाला और अन्य वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिति ने आयोजन को और अधिक प्रभावशाली बना दिया। सभी नेताओं ने एक स्वर में कहा कि यह जीत संगठन की मेहनत और कार्यकर्ताओं के अथक प्रयास का परिणाम है।

इस पूरे आयोजन में एक खास बात यह रही कि इसमें केवल राजनीतिक कार्यकर्ता ही नहीं, बल्कि विभिन्न समुदायों के लोग भी बड़ी संख्या में शामिल हुए। विशेष रूप से बंगाली समुदाय की सक्रिय भागीदारी ने इस जश्न को एक सांस्कृतिक रंग भी दिया। सूरत में रहने वाले बंगाली समुदाय के लोगों ने पारंपरिक व्यंजन जैसे झालमुड़ी और रसगुल्ला वितरित कर उत्सव को और खास बना दिया। इससे यह संदेश भी गया कि यह केवल एक राजनीतिक आयोजन नहीं, बल्कि सामाजिक एकता का प्रतीक भी है।

बंगाली समुदाय के प्रतिनिधियों बसु अधिकारी, सदानंद राउत और मिल्टन डे ने कहा कि वे इस जीत को एक सकारात्मक बदलाव के रूप में देखते हैं और उम्मीद करते हैं कि आने वाले समय में विकास की गति और तेज होगी। उन्होंने कहा कि सूरत जैसे शहर में सभी समुदायों का एक साथ आकर इस तरह का जश्न मनाना सामाजिक सौहार्द का उदाहरण है।

जश्न के दौरान युवाओं की भागीदारी भी उल्लेखनीय रही। बड़ी संख्या में युवा कार्यकर्ता झंडे लेकर सड़कों पर नाचते-गाते दिखाई दिए। कई युवाओं ने इसे अपने राजनीतिक जुड़ाव और भविष्य की उम्मीदों से जोड़कर देखा। उनका कहना था कि यह जीत उन्हें राजनीति में और अधिक सक्रिय होने के लिए प्रेरित करती है।

कार्यक्रम में महिलाओं की भागीदारी भी काफी उत्साहजनक रही। कई महिला कार्यकर्ता पारंपरिक परिधानों में शामिल हुईं और उन्होंने ढोल की थाप पर नृत्य कर खुशी व्यक्त की। यह दृश्य इस बात का संकेत था कि पार्टी का जनाधार अब केवल पुरुषों तक सीमित नहीं है, बल्कि महिलाओं की भागीदारी भी लगातार बढ़ रही है।

इस पूरे आयोजन के दौरान सुरक्षा व्यवस्था भी कड़ी रखी गई थी। बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया था ताकि किसी भी प्रकार की अव्यवस्था न हो। हालांकि पूरे कार्यक्रम में शांति और अनुशासन बना रहा और उत्सव पूरी तरह सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि सूरत जैसे शहरों में इस तरह के जश्न केवल जीत का उत्सव नहीं होते, बल्कि यह संगठन की ताकत दिखाने का भी एक माध्यम होते हैं। औद्योगिक और व्यापारिक केंद्र होने के कारण सूरत में विभिन्न राज्यों और समुदायों के लोग रहते हैं, जिससे यहां के राजनीतिक कार्यक्रमों का प्रभाव और भी व्यापक हो जाता है।

विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि पश्चिम बंगाल, असम और पुडुचेरी में आए परिणामों ने राष्ट्रीय राजनीति में भाजपा की स्थिति को और मजबूत किया है। इसका असर गुजरात जैसे राज्यों में भी दिखाई देता है, जहां कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ता है और संगठनात्मक गतिविधियां तेज होती हैं।

कार्यक्रम के दौरान नेताओं ने यह भी कहा कि यह जीत केवल एक शुरुआत है और आने वाले समय में संगठन को और अधिक मजबूत करने की आवश्यकता है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे जनता के बीच लगातार सक्रिय रहें और सरकार की योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने का कार्य करें।

इस अवसर पर कई वरिष्ठ नेताओं ने यह भी कहा कि भाजपा की सफलता का सबसे बड़ा कारण उसका बूथ स्तर तक मजबूत संगठन है। उन्होंने कहा कि जमीनी कार्यकर्ता ही पार्टी की असली ताकत हैं, जो हर चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

कुल मिलाकर सूरत में हुआ यह भव्य आयोजन केवल एक राजनीतिक जीत का जश्न नहीं था, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक और संगठनात्मक प्रदर्शन था। इसमें जहां एक ओर पार्टी की ताकत और उत्साह दिखाई दिया, वहीं दूसरी ओर विभिन्न समुदायों की भागीदारी ने इसे और भी व्यापक और समावेशी बना दिया।

पश्चिम एशिया संकट का असर: एलपीजी खपत में बड़ी गिरावट, ATF और डीजल की रफ्तार भी धीमी

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया में जारी भू-राजनीतिक तनाव का सीधा असर भारत के ऊर्जा बाजार पर दिखाई देने लगा है। आपूर्ति श्रृंखला में बाधाओं और अंतरराष्ट्रीय मार्गों में अस्थिरता के चलते देश में रसोई गैस यानी एलपीजी (Liquefied Petroleum Gas) की खपत में अप्रैल 2026 के दौरान बड़ी गिरावट दर्ज की गई है। पेट्रोलियम योजना एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ (PPAC) के ताजा आंकड़ों के अनुसार, एलपीजी खपत 16.16 प्रतिशत घटकर 22 लाख टन रह गई, जो पिछले वर्ष इसी अवधि में 26.2 लाख टन थी।

यह गिरावट केवल सालाना आधार पर ही नहीं, बल्कि मासिक स्तर पर भी देखने को मिली है। मार्च 2026 में एलपीजी खपत 23.79 लाख टन थी, जो अप्रैल में और घटकर 22 लाख टन पर आ गई। यह रुझान संकेत देता है कि वैश्विक परिस्थितियों का असर सीधे घरेलू ऊर्जा उपयोग पर पड़ रहा है।

भारत अपनी एलपीजी जरूरतों का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा आयात करता है, और इसका बड़ा हिस्सा होर्मुज जलडमरूमध्य के जरिए देश तक पहुंचता है। वर्तमान में ईरान, इजराइल और अमेरिका के बीच तनाव बढ़ने से इस महत्वपूर्ण समुद्री मार्ग पर अनिश्चितता बनी हुई है, जिससे आपूर्ति श्रृंखला प्रभावित हुई है। इसी वजह से खाड़ी देशों से आने वाली एलपीजी खेपों में देरी और बाधाएं सामने आई हैं।

आपूर्ति को संतुलित रखने के लिए सरकार ने कुछ तात्कालिक कदम भी उठाए हैं। वाणिज्यिक उपभोक्ताओं जैसे होटल और उद्योगों को गैस आपूर्ति में कमी की गई है, ताकि घरेलू उपभोक्ताओं को प्राथमिकता दी जा सके। साथ ही, घरेलू सिलेंडर की दो रिफिलिंग के बीच अंतराल बढ़ाकर आपूर्ति दबाव को नियंत्रित करने की कोशिश की जा रही है।

इस बीच, केवल एलपीजी ही नहीं बल्कि अन्य पेट्रोलियम उत्पादों पर भी इसका असर दिखाई दे रहा है। विमानन ईंधन, यानी एटीएफ (Aviation Turbine Fuel) की खपत भी 1.37 प्रतिशत घटकर 7.61 लाख टन रह गई है। यह गिरावट संकेत देती है कि हवाई यातायात और ईंधन उपयोग में भी हल्की सुस्ती आई है। इसी तरह डीजल की वृद्धि दर भी लगभग ठहराव पर पहुंच गई है। डीजल की खपत केवल 0.25 प्रतिशत बढ़कर 82.82 लाख टन रही, जो पहले की तुलना में काफी धीमी वृद्धि है। यह स्थिति औद्योगिक गतिविधियों और परिवहन क्षेत्र में सीमित गति को दर्शाती है।

ऑटो सेक्टर में जोरदार उछाल : बजाज ऑटो की 40% और अशोक लेलैंड की 9% बिक्री वृद्धि से बाजार में नई ऊर्जा

नई दिल्ली। भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग ने अप्रैल 2026 में मजबूत प्रदर्शन दर्ज किया है, जिससे यह संकेत मिलता है कि घरेलू मांग और निर्यात दोनों मोर्चों पर सेक्टर में स्थिर रिकवरी और विस्तार का दौर जारी है। देश की प्रमुख वाहन निर्माता कंपनियों में शामिल बजाज ऑटो लिमिटेड और अशोक लेलैंड लिमिटेड ने इस महीने उल्लेखनीय बिक्री वृद्धि दर्ज कर ऑटो बाजार में सकारात्मक रुझान को और मजबूत किया है।

बजाज ऑटो की कुल बिक्री में इस बार 40 प्रतिशत की जोरदार वृद्धि दर्ज की गई है। कंपनी ने अप्रैल में कुल 5,13,792 यूनिट्स की बिक्री की, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में यह आंकड़ा 3,65,810 यूनिट्स था। यह वृद्धि न केवल कंपनी के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि पूरे ऑटो सेक्टर की मजबूती का संकेत भी देती है।

इस प्रदर्शन में सबसे बड़ी भूमिका निर्यात बाजार की रही, जहां बजाज ऑटो ने 83 प्रतिशत की जबरदस्त छलांग लगाई। कंपनी का निर्यात 2,65,582 यूनिट्स तक पहुंच गया। यह दर्शाता है कि अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भारतीय दोपहिया और तिपहिया वाहनों की मांग लगातार बढ़ रही है। घरेलू बाजार में भी कंपनी ने स्थिर वृद्धि दर्ज की है। घरेलू बिक्री 13 प्रतिशत बढ़कर 2,48,210 यूनिट्स हो गई। दोपहिया वाहनों की घरेलू बिक्री 11 प्रतिशत बढ़कर 2,10,063 यूनिट्स तक पहुंची, जबकि निर्यात में 78 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ यह आंकड़ा 2,29,890 यूनिट्स तक पहुंच गया।

कमर्शियल व्हीकल सेगमेंट में भी बजाज ऑटो ने मजबूत प्रदर्शन किया है। इस श्रेणी में 54 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज करते हुए कुल 73,839 यूनिट्स की बिक्री हुई। यह संकेत देता है कि शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में वाणिज्यिक परिवहन की मांग बढ़ रही है।

दूसरी ओर, अशोक लेलैंड लिमिटेड ने भी स्थिर और सकारात्मक प्रदर्शन दर्ज किया है। कंपनी की कुल बिक्री 9 प्रतिशत बढ़कर 14,646 यूनिट्स रही, जो पिछले वर्ष 13,421 यूनिट्स थी। यह वृद्धि मुख्य रूप से घरेलू बाजार की मांग और वाणिज्यिक वाहन क्षेत्र में सुधार के कारण देखने को मिली।

अशोक लेलैंड की घरेलू बिक्री 14 प्रतिशत बढ़कर 14,242 यूनिट्स तक पहुंच गई। कंपनी के मध्यम और भारी वाणिज्यिक वाहन (M&HCV) सेगमेंट में 8 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जिसमें 7,977 यूनिट्स की बिक्री हुई। वहीं हल्के वाणिज्यिक वाहनों (LCV) की बिक्री 6,265 यूनिट्स रही, जो पिछले वर्ष 5,103 यूनिट्स थी।

ऑटो सेक्टर के इन ताजा आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय बाजार में मांग लगातार मजबूत हो रही है। खासकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार, त्योहारों के बाद की खपत और लॉजिस्टिक्स सेक्टर में विस्तार ने वाणिज्यिक वाहनों की मांग को बढ़ावा दिया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि निर्यात में आई तेजी भारतीय ऑटोमोबाइल कंपनियों की वैश्विक प्रतिस्पर्धा क्षमता को दर्शाती है। बजाज ऑटो जैसे ब्रांडों की अंतरराष्ट्रीय बाजारों में मजबूत पकड़ यह संकेत देती है कि भारत अब केवल घरेलू मांग पर निर्भर नहीं है, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी एक महत्वपूर्ण सप्लायर बन चुका है। इसके अलावा, इलेक्ट्रिक वाहनों और नए मॉडल्स की बढ़ती मांग भी इस सेक्टर को नई दिशा दे रही है। कंपनियां लगातार तकनीकी नवाचार और नए उत्पाद लॉन्च के जरिए बाजार में अपनी स्थिति मजबूत कर रही हैं।

कुल मिलाकर, अप्रैल 2026 के ये आंकड़े भारतीय ऑटोमोबाइल उद्योग के लिए सकारात्मक संकेत हैं। बजाज ऑटो और अशोक लेलैंड की वृद्धि यह दिखाती है कि सेक्टर में रिकवरी के साथ-साथ विस्तार का दौर भी जारी है। यदि यही रुझान बना रहता है, तो आने वाले महीनों में ऑटो सेक्टर देश की आर्थिक वृद्धि में और महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

वडोदरा में प्री-मैरिटल कम्युनिकेशन सेंटर की शुरुआत, स्वस्थ वैवाहिक जीवन की दिशा में नई पहल

वडोदरा। महिलाओं के सशक्तिकरण और पारिवारिक जीवन को अधिक संतुलित एवं समझदारीपूर्ण बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए सखी वन स्टॉप सेंटर में प्री-मैरिटल कम्युनिकेशन सेंटर (PMCC) की शुरुआत की गई है। इस पहल का उद्देश्य विवाह से पहले युवाओं को मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक रूप से तैयार करना है, ताकि वे वैवाहिक जीवन की जिम्मेदारियों को बेहतर ढंग से समझ सकें और निभा सकें। इस केंद्र के माध्यम से युवा पुरुषों और महिलाओं को संवाद कौशल, आपसी समझ, सम्मान और रिश्तों में संतुलन बनाए रखने जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर मार्गदर्शन दिया जाएगा। विशेषज्ञ काउंसलिंग सत्रों के जरिए यह प्रयास किया जाएगा कि विवाह से पहले ही संभावित दंपत्ति एक-दूसरे की अपेक्षाओं, सोच और व्यवहार को बेहतर तरीके से समझ सकें, जिससे भविष्य में टकराव की संभावनाएं कम हो सकें।

केंद्र का उद्घाटन सप्लाई ऑफिसर श्रीमती गीताबेन देसाई ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह पहल केवल एक औपचारिक

केंद्र नहीं है, बल्कि यह समाज में बदलते पारिवारिक ढांचे को समझने और उसे मजबूत करने का एक प्रयास है। उनके अनुसार, आज के समय में रिश्तों में संवाद की कमी कई समस्याओं की जड़ बनती जा रही है, जिसे समय रहते समझना बेहद जरूरी है।

उन्होंने यह भी कहा कि यह सेंटर दंपत्तियों को केवल वैवाहिक जीवन ही नहीं, बल्कि उससे जुड़े मानसिक स्वास्थ्य, तनाव प्रबंधन और विवाद समाधान जैसे पहलुओं पर भी प्रशिक्षित करेगा। इससे न केवल व्यक्तिगत जीवन बेहतर होगा, बल्कि परिवारों में भी स्थिरता और संतुलन बढ़ेगा।

यह पहल राष्ट्रीय महिला आयोग द्वारा संचालित कार्यक्रमों का हिस्सा है, जिसके तहत देश के 14 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में ऐसे केंद्र पहले से कार्यरत हैं। अब इसी मॉडल को गुजरात में भी लागू किया गया है, जिससे स्थानीय स्तर पर महिलाओं और युवाओं को सीधे लाभ मिल सके।

गुजरात में यह केंद्र महिला एवं बाल विकास विभाग के सहयोग से संचालित किया जा रहा है। अधिकारियों का मानना है कि इस तरह की पहल से न केवल व्यक्तिगत स्तर पर जागरूकता बढ़ेगी, बल्कि सामाजिक स्तर पर भी सकारात्मक बदलाव देखने को मिलेंगे। विशेष रूप से युवाओं में रिश्तों को लेकर अधिक परिपक्वता और जिम्मेदारी की भावना विकसित होने की उम्मीद है।

आज के समय में जब विवाह पूर्व और विवाह पश्चात संबंधों में कई तरह की चुनौतियां सामने आ रही हैं, ऐसे में यह केंद्र एक मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार, यदि युवा पीढ़ी को पहले से ही संवाद और समझदारी के महत्व के बारे में प्रशिक्षित किया जाए, तो भविष्य में कई पारिवारिक विवादों को रोका जा सकता है।

वडोदरा जैसे शहरी और तेजी से विकसित हो रहे शहर में यह पहल विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानी जा रही है, क्योंकि यहां शिक्षा और रोजगार के साथ-साथ सामाजिक संरचना भी तेजी से बदल रही है। ऐसे में पारिवारिक स्थिरता बनाए रखने के लिए इस तरह के प्रयास समय की आवश्यकता बन जाते हैं। कुल मिलाकर, प्री-मैरिटल कम्युनिकेशन सेंटर की शुरुआत केवल एक प्रशासनिक पहल नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक निवेश है, जो आने वाले समय में मजबूत, समझदार और संतुलित पारिवारिक जीवन की नींव रखने में सहायक हो सकता है।

"फाल्गुन फेरी" के उपलक्ष्य में 08 मई को पालीताना से बान्द्रा के लिए चलेगी विशेष ट्रेन, टिकट बुकिंग 5 मई (मंगलवार) से शुरू होगी

यात्रियों की सुविधा तथा "फाल्गुन फेरी" के अवसर पर पालीताना जैन मंदिर में होने वाली क्षद्धालुओं की अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे द्वारा विशेष किराये पर पालीताना और बान्द्रा टर्मिनस के बीच सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार ट्रेन का विवरण निम्नानुसार है:

ट्रेन संचालन विवरण:

बान्द्रा टर्मिनस से पालीताना के लिए चलने वाली बान्द्रा-पालीताना सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन (09023) दिनांक 06 मई, 2026 (बुधवार) को बान्द्रा टर्मिनस से दोपहर 12.15 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन

प्रातः 05.10 बजे पालीताना पहुंचेगी। इसी प्रकार वापसी में पालीताना-बान्द्रा सुपरफास्ट स्पेशल ट्रेन (09024) दिनांक 08 मई, 2026 (शुक्रवार) को पालीताना से शाम 17.00 बजे प्रस्थान करेगी तथा अगले दिन सुबह 07.25 बजे बान्द्रा टर्मिनस पहुंचेगी। यह ट्रेन दोनों दिशाओं में सिहोर, सोनगढ़, धोला, बोटाद, अहमदाबाद, वडोदरा, सूरत, वलसाड, वापी एवं बोरीवली स्टेशनों पर ठहराव करेगी। ट्रेन में यात्रियों की सुविधा के लिए स्लीपर क्लास एवं एसएलआरडी कोच उपलब्ध रहेंगे।

बुकिंग संबंधी जानकारी :

ट्रेन संख्या 09023 एवं 09024 की बुकिंग दिनांक 05 मई, 20206 (मंगलवार) से सभी यात्री आरक्षण केन्द्रों तथा आईआरसीटीसी की आधिकारिक वेबसाइट पर शूरू होगी। यात्री ट्रेन के परिचालन समय, ठहराव एवं संरचना से संबंधित विस्तृत जानकारी के लिए भारतीय रेलवे की आधिकारिक वेबसाइट www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

रेलकर्मी ने पेश की ईमानदारी की मिसाल, ट्रैक पर मिला बैग कैश सहित लौटाया

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के गोधरा–वडोदरा रेलखंड पर इंजीनियरिंग विभाग में कार्यरत की-मैन श्री सलीम खान ने अपनी ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा एवं मानवता का परिचय देते हुए एक यात्री का खोया हुआ बैग सुरक्षित लौटाकर उत्कृष्ट एवं सराहनीय कार्य किया। पश्चिम रेलवे के जनसम्पर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के अंतर्गत वडोदरा-गोधरा सेक्शन पर दिनांक 30 अप्रैल 2026 को ट्रेन संख्या 19165 से वाराणसी जा रहे यात्री श्री दीपक यादव का बैग डेरोल–खरसालिया स्टेशन के मध्य कहीं गिर गया था। सुपरवाइजर

द्वारा उन्हें इसे ढूंढने का कार्य दिया गया और अपनी ट्रैक निरीक्षण ड्यूटी के दौरान यह बैग खरसालिया के की-मैन श्री सलीम खान को मिला। बैग की जांच करने पर उसमें लगभग 1,30,000 नकद, मोबाइल फोन, कपड़े एवं अन्य आवश्यक सामान पाया गया। श्री सलीम खान ने पूर्ण ईमानदारी एवं जिम्मेदारी का परिचय देते हुए कैश राशि सहित बैग एवं अन्य बहुमूल्य सामान संबंधित यात्री को सुपरवाइजर के सामने सुरक्षित रूप से उन्हें वापस सौंप दिया।

श्री सलीम खान द्वारा प्रदर्शित यह सत्यनिष्ठा एवं कर्तव्यपरायणता न केवल रेलवे कर्मचारियों की सकारात्मक कार्यसंस्कृति को दर्शाती है, बल्कि भारतीय रेल के प्रति लोगों के विश्वास को भी और मजबूत करती है।

भीषण गर्मी में यात्रियों को राहत: भावनगर मंडल द्वारा बोटाद एवं जूनागढ़ स्टेशनों पर निःशुल्क शीतल पेयजल वितरण

भीषण गर्मी एवं बढ़ते तापमान के मद्देनज़र यात्रियों को राहत प्रदान करने हेतु पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल द्वारा जनहित में विशेष पहल की गई है। इस क्रम में दिनांक 04 मई, 2026 (सोमवार) को बोटाद एवं जूनागढ़ रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों के लिए निःशुल्क शीतल पेयजल वितरण की व्यवस्था की गई।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने जानकारी देते हुए बताया कि बोटाद रेलवे स्टेशन पर प्लेटफॉर्म क्षेत्र में यात्रियों—विशेषकर वरिष्ठ नागरिकों, महिलाओं एवं बच्चों—को ठंडा पेयजल उपलब्ध कराया गया, जिससे उन्हें भीषण गर्मी से काफी राहत मिली। इस सेवा में सामाजिक कार्यकर्ता श्री चौहान महेशभाई पोपटभाई का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

इसी प्रकार जूनागढ़ रेलवे स्टेशन पर प्लेटफॉर्म संख्या 1 एवं प्रतीक्षालय हॉल में यात्रियों के लिए निःशुल्क शीतल पेयजल वितरण किया गया। इस जनहितकारी अभियान में जूनियर चेम्बर इंटरनेशनल (JCI) संस्था का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

दोनों स्टेशनों पर इस व्यवस्था को सफलतापूर्वक संचालित करने में भावनगर मंडल के वाणिज्य विभाग के निरीक्षकों, टिकट चेकिंग स्टाफ एवं अन्य कर्मचारियों ने सक्रिय भूमिका निभाई तथा वितरण कार्य को सुव्यवस्थित एवं सुरक्षित ढंग से संपन्न किया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक (DRM) श्री दिनेश वर्मा ने कहा, "भीषण गर्मी के दौरान यात्रियों को राहत प्रदान करना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। भावनगर मंडल द्वारा विभिन्न स्वयंसेवी संगठनों के सहयोग से इस प्रकार की जनहितकारी गतिविधियाँ निरंतर आयोजित की जा रही हैं। यह पहल हमारी सामाजिक प्रतिबद्धता एवं यात्री-हित के प्रति संवेदनशीलता को दर्शाती है।"

भावनगर मंडल द्वारा यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि यात्रियों को सुरक्षित, सुविधाजनक एवं मानवीय सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती रहें। भीषण गर्मी के दौरान इस प्रकार की राहत सेवाएँ आगे भी निरंतर जारी रहेंगी।

मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए केवल 22 दिनों में अहमदाबाद में भारतीय रेलवे ट्रैक पर सभी पांच भारी पोर्टल बीम लॉन्च किए गए

इंजीनियरिंग के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के तौर पर, मुंबई-अहमदाबाद बुलेट ट्रेन परियोजना के लिए मणिनगर में अहमदाबाद-वडोदरा रेलवे लाइन के ऊपर, सभी पाँच (05) प्रीकास्ट-प्रीस्ट्रेस्ड भारी पोर्टल बीम (गर्डर) को मात्र 22 दिनों के भीतर सफलतापूर्वक स्थापित कर दिया गया है।

लॉन्चिंग प्रक्रिया 8, 13, 19, 24 और 29 अप्रैल 2026 को पूर्व-नियोजित और चरणबद्ध क्रम में सफलतापूर्वक पूरी की गई। यह कार्य भारतीय रेलवे की सक्रिय पटरियों के ऊपर अत्यंत उच्च स्तर के समन्वय, तीव्र कार्यगति तथा सटीक एवं सुरक्षित निष्पादन के साथ पूरा किया गया। सबसे भारी बीम, जिसका वजन लगभग 1360 एमटी था, 8 अप्रैल 2026 को लॉन्च किया गया, जो परिचालन रेलवे लाइनों पर किए गए सबसे भारी लिफ्टों में से एक को चिह्नित करता है। पांचों बीमों में से प्रत्येक का वजन 1170 एमटी से 1360 एमटी के बीच था, जिससे यह रेलवे

अवसंरचना पर किए गए सबसे जटिल संरचनात्मक संचालन में से एक बन गया। मणिनगर में, बुलेट ट्रेन का एलाइनमेंट मौजूदा रेलवे ट्रैकों से ऊँचाई वाले स्तर पर चौंकाने और सीमित ज्यामिति के साथ क्रॉस करती है, जिसके लिए सावधानीपूर्वक संरचनात्मक योजना की आवश्यकता होती है। दो पियर्स के बीच का अंतराल भी अपेक्षाकृत बड़ा है (लगभग 30 मी से 34 मी), जो सुरक्षित रूप से भार स्थानांतरित करने के लिए पोर्टल बीम जैसी मजबूत और कठोर सहायक प्रणाली की आवश्यकता को और बढ़ाता है।

इस स्थान पर पोर्टल बीम को भारी संरचनाओं के रूप में डिज़ाइन किया गया है, ताकि वे भारतीय रेलवे की कई सक्रिय पटरियों—जिनमें अहमदाबाद-वडोदरा की 'अप', 'डाउन' और तीसरी लाइनें शामिल हैं—के ऊपर से गुज़र सकें। इनका विशाल आकार और वज़न इन्हें बेहतर स्थिरता और न्यूनतम नीचे को झुकाव प्रदान करता है, जो इतने व्यस्त रेलवे ट्रैक पर सटीक ट्रैक संरेखण बनाए रखने और सुरक्षित संचालन सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत आवश्यक है। लॉन्चिंग का काम 2200 मीट्रिक टन क्रॉलर क्रेन का इस्तेमाल करके किया गया, जो मुख्य उपकरण के तौर पर इस्तेमाल हुआ; यह भारत में भारतीय रेलवे ट्रैक पर पहली बार इस्तेमाल किया गया है। प्रत्येक पोर्टल बीम को लगभग 3.5 घंटे में लॉन्च किया गया, जो पहले के 9-घंटे के ब्लॉकों की तुलना में काफी तेज़ है और भारतीय रेलवे के साथ निकट समन्वय में किया गया है। सीमित स्थान, ओएचई (ओवर-हेड इलेक्ट्रिफिकेशन) और सक्रिय रेलवे ट्रैकों जैसी चुनौतियों के बावजूद, संचालन उच्च सटीकता, कड़े सुरक्षा जांच और लगातार निगरानी के साथ पूरा किया गया।

अतिरिक्त जानकारी:

पोर्टल बीम एक प्रीकास्ट कंक्रीट संरचना है, जिसकी लंबाई 34 मीटर है और इसका क्रॉस-सेक्शन 5.5 मीटर गुणा 4.5 मीटर है। इन बीमों को साइट पर ही प्रीकास्ट किया जा रहा है और इन्हें भारी एकीकृत इकाइयों के रूप में स्थापित किया जा रहा है।

पश्चिम रेलवे - रतलाम मण्डल

ई-निविदा सूचना

निविदा संख्या SnT-RTM-26-08-Signal **दिनांक: 02.05.2026** निम्न कार्य के लिए मंडल रेल प्रबंधक (एस एण्ड टी) पश्चिम रेलवे रतलाम द्वारा भारत के राष्ट्रपति की ओर से व उनके लिए ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। **कार्य का नाम:** निम्नलिखित कार्यों के संबंध में सिग्नलिंग सामग्री की आपूर्ति, स्थापना, परीक्षण और चालू करना:- 1) सिंहस्थ 2028 के तहत ताजपुर में अतिरिक्त लूप लाइन। 2) सिंहस्थ 2028 के तहत नाइखेरी यार्ड का पुनर्निर्माण, जिसमें अतिरिक्त लूप और स्टेबलिंग लाइन शामिल है। 3) सिंहस्थ 2028 के तहत राजेंद्र नगर में स्टेबलिंग लाइन का प्रावधान। 4) सिंहस्थ 2028 के तहत पिंगलेश्वर में आपातकालीन क्रॉसओवर। 5) सिंहस्थ 2028 के तहत बरलाई में अतिरिक्त लूप लाइन। 6) सिंहस्थ 2028 के तहत विक्रम नगर में मशीन साइडिंग का विस्तार और लाइन नंबर 1 के डेड एंड्स का विस्तार, ताकि पूरी लंबाई की ट्रेनों को खड़ा किया जा सके। **कार्य की अनुमानित लागत:** Rs.15,59,11,158.75/- **बयाना राशि :** Rs.31,18,200.00/- **निविदा फार्म का मूल्य :** शून्य/- **निविदा बंद करने का समय एवं दिनांक:** दिनांक 25/05/2026 समय 15.00 बजे तक। **तकनीकी निविदा खुलने का समय एवं दिनांक:** दिनांक 25/05/2026 समय 15.30 बजे के बाद। **व्यवसायिक निविदा खुलने का समय एवं दिनांक:** दिनांक तकनीकी बोली के मूल्यांकन के बाद सूचित किया जाएगा। **वैधता :** निविदा खुलने की दिनांक से 90 दिन। **कार्य का पूरा करने की अवधि :** 12 माह **निविदा अनुभाग कार्यालय प्रभारी और बोली खोलने का स्थान :** सीनियर डीएसटीई रतलाम, डीआरएम कार्यालय रतलाम म.प्र. निविदा सिर्फ अनलाईन ई-निविदा पोर्टल **http://www.ireps.gov.in** पर देखा व जमा किया जा सकता है।

Apex/33

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

तमिलनाडु की राजनीति में बड़ा उलटफेर: विजय की TVK बनी सबसे बड़ी पार्टी, द्रविड़ राजनीति को नया झटका

चेन्नई। दक्षिण भारत की राजनीति में लंबे समय से स्थापित द्रविड़ वर्चस्व को इस बार एक अप्रत्याशित चुनौती मिली है। अभिनेता से नेता बने जोसेफ विजय की पार्टी तमिलगा वेत्री कषगम ने अपने पहले ही चुनावी प्रदर्शन में 107 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर राजनीतिक इतिहास में एक नया अध्याय लिख दिया है। इस परिणाम ने न केवल तमिलनाडु की राजनीति को झकझोर दिया है, बल्कि दशकों से चले आ रहे द्रविड़ राजनीतिक ढांचे पर भी गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

तमिलनाडु की राजनीति पिछले कई दशकों से मुख्यतः दो बड़े दलों के इर्द-गिर्द घूमती रही है—द्रविड़ मुनेत्र कड़गम और ऑल इंडिया अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम। सत्ता का हस्तांतरण अक्सर इन्हीं दोनों के बीच होता रहा है, लेकिन इस बार जनता ने एक नया विकल्प चुनकर इस परंपरा को चुनौती दे दी है।

नतीजों के अनुसार TVK ने 107 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी का दर्जा हासिल किया, जबकि AIADMK गठबंधन 53 सीटों पर सिमट गया। DMK और उसके सहयोगी 66 सीटों तक ही सीमित रह गए। यह परिणाम इस बात का संकेत है कि मतदाताओं ने स्थापित राजनीतिक व्यवस्था से आगे बढ़कर नए नेतृत्व पर भरोसा जताया है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि विजय की लोकप्रियता, फिल्मी छवि और जनता से सीधे जुड़ाव ने इस चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाई। उनके समर्थकों के बीच यह भावना

रही कि वे एक "नए युग के नेता" के रूप में उभर रहे हैं, जो पारंपरिक राजनीति से अलग पहचान रखते हैं।

चुनावी नतीजों के बाद पूरे राज्य में उत्साह और आश्चर्य का माहौल देखा गया। TVK समर्थकों ने पार्टी के चुनाव चिन्ह सीटी को प्रतीक बनाकर जश्न मनाया। जैसे ही रुझान पार्टी के पक्ष में मजबूत होते गए, समर्थकों ने सड़कों पर उतरकर उत्सव मनाना शुरू कर दिया।

विजय के परिवार में भी खुशी का माहौल देखा गया। उनके माता-पिता टीवी के सामने बैठकर परिणाम देखते रहे और जैसे-जैसे पार्टी की सीटें बढ़ती गईं, उनके चेहरे पर गर्व और खुशी झलकती रही। यह क्षण उनके लिए भावनात्मक रूप से बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

समर्थकों ने विजय के आवास के बाहर फूलों की बारिश कर उनका स्वागत किया। जैसे ही वे बाहर आए, लोगों ने उनकी कार पर गुलाब की पंखुड़ियां बरसाईं और जोरदार नारेबाजी की। यह दृश्य किसी फिल्मी जश्न से कम नहीं था, जिसने पूरे माहौल को उत्सव में बदल दिया।

इस चुनाव परिणाम के बाद एम.के. स्टालिन ने हार स्वीकार करते हुए कहा कि उनकी पार्टी जनता के फैसले का सम्मान करती है। उन्होंने कहा कि DMK अब विपक्ष की भूमिका में रहकर अपनी जिम्मेदारी निभाएगी और जनहित के मुद्दों पर काम जारी रखेगी। उनके इस बयान को लोकतांत्रिक परिपक्वता के रूप में देखा जा रहा है।

स्टालिन ने सोशल मीडिया पर भी लिखा कि वे जनता के फैसले को स्वीकार करते हैं और पार्टी का राजनीतिक सफर बिना किसी रुकावट के आगे बढ़ेगा। यह बयान हार के बावजूद राजनीतिक स्थिरता बनाए रखने का संकेत देता है।

विजय ने भी इस ऐतिहासिक जीत पर अपने समर्थकों और परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया। परिणाम आने के बाद वे अपने घर पहुंचे और वहां से बालकनी में आकर उन्होंने समर्थकों का अभिवादन किया। यह क्षण उनके राजनीतिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव माना जा रहा है, जहां एक फिल्म स्टार ने एक मजबूत राजनीतिक शक्ति के रूप में अपनी पहचान स्थापित की।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह परिणाम तमिलनाडु की राजनीति में एक नए युग की शुरुआत हो सकता है। दशकों से चले आ रहे द्रविड़ मॉडल के राजनीतिक ढांचे में यह पहली बड़ी दरार है, जिसने यह साबित किया है कि मतदाता अब नए विकल्पों की ओर देख रहे हैं।

हालांकि यह भी माना जा रहा है कि इतनी बड़ी राजनीतिक सफलता के बाद TVK के सामने शासन और प्रशासन की बड़ी चुनौती होगी। चुनाव जीतना और शासन चलाना दोनों अलग जिम्मेदारियां हैं, और अब पार्टी को जनता की उम्मीदों पर खरा उतरना होगा।

कुल मिलाकर, तमिलनाडु का यह चुनाव परिणाम केवल एक राजनीतिक बदलाव नहीं, बल्कि एक सामाजिक और सांस्कृतिक संकेत भी है कि राज्य की जनता अब पारंपरिक राजनीति से आगे बढ़कर नए नेतृत्व और नए विचारों को स्वीकार करने के लिए तैयार है।

सूरत में एसबीआई लूटकांड का बड़ा खुलासा: यूपी से दो आरोपी गिरफ्तार, 50 लाख की वारदात की परतें खुलीं

सूरत। गुजरात के सबसे व्यस्त और तेजी से विकसित हो रहे शहरी क्षेत्रों में से एक सूरत के वराछा इलाके में स्थित भारतीय स्टेट बैंक शाखा में हुई 50 लाख रुपये की सनसनीखेज लूटकांड ने पूरे शहर में हड़कंप मचा दिया था। अब इस हाई-प्रोफाइल मामले में पुलिस को बड़ी सफलता मिली है, जिससे न केवल वारदात की परतें खुलने लगी हैं बल्कि पूरे नेटवर्क का भी खुलासा होता दिख रहा है। क्राइम ब्रांच (डीसीबी) की टीम ने इस मामले में उत्तर प्रदेश के अयोध्या और गोंडा जिलों से दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इन आरोपियों की पहचान शुभम कुमार अजीत ठाकुर और विकास सिंह अरुण कुमार सिंह के रूप में हुई है। दोनों को अब ट्रांजिट रिमांड पर गोंडा कोर्ट में पेश किए जाने की प्रक्रिया चल रही है, जिसके बाद उन्हें सूरत लाकर विस्तृत पूछताछ की जाएगी।

यह गिरफ्तारी पुलिस के लिए एक बड़ी उपलब्धि मानी जा रही है, क्योंकि इसी के साथ लूट में इस्तेमाल किए गए तीन वाहनों की पहचान भी कर ली गई है, जिससे पूरे केस की जांच को नई दिशा मिली है। पुलिस अब यह भी जांच कर रही है कि इस वारदात के पीछे कोई बड़ा संगठित गिरोह सक्रिय है या नहीं।

जांच में जो सबसे चौंकाने वाली बात सामने आई है, वह यह है कि लूट में इस्तेमाल की गई अपाचे बाइक फर्जी आधार कार्ड के जरिए तेलंगाना से खरीदी गई थी। आरोपियों ने अपनी असली पहचान छिपाने के लिए पूरी योजना बेहद सुनियोजित तरीके से तैयार की थी। यह सिर्फ एक साधारण अपराध नहीं, बल्कि एक पूर्व नियोजित संगठित अपराध का संकेत देता है।

इसके अलावा पुलिस जांच में यह भी सामने आया कि आरोपी घटना से पहले सूरत के रांदेर इलाके में किराए के मकान में रह रहे थे। उन्होंने यह मकान भी फर्जी पहचान पत्र के आधार पर लिया था और वारदात के तुरंत बाद इसे खाली कर दिया गया, ताकि किसी प्रकार का सुराग न छोड़ा जाए। यह दर्शाता है कि अपराधियों ने हर कदम बेहद सोच-समझकर उठाया था।

पुलिस को इस केस में तकनीकी जांच से बड़ी सफलता मिली। ANPR (Automatic Number Plate Recognition) कैमरों और सीसीटीवी फुटेज ने जांच में निर्णायक भूमिका निभाई। 16 अप्रैल को एयरपोर्ट रोड पर संदिग्ध गतिविधियां कैमरों में कैद हुई थीं, जिसके बाद पुलिस ने मोबाइल टावर डेटा और तकनीकी विश्लेषण का सहारा लिया। इसी आधार पर संदिग्ध मोबाइल नंबरों को ट्रैक किया गया और धीरे-धीरे पूरा नेटवर्क सामने आने लगा।

सूत्रों के अनुसार, इस वारदात में पांच से अधिक हथियारबंद लुटेरे शामिल थे। ये सभी एसबीआई शाखा में अचानक घुसे और कर्मचारियों तथा ग्राहकों को बंधक बना लिया। हथियारों के बल पर उन्होंने करीब 50 लाख रुपये नकद, मोबाइल फोन और अन्य कीमती सामान लूट लिया। इसके बाद तीन अलग-अलग मोटरसाइकिलों पर सवार होकर सभी आरोपी फरार हो गए।

घटना के बाद बैंक कर्मचारियों में भारी आक्रोश और असुरक्षा की भावना फैल गई है। कर्मचारियों का कहना है कि बैंक शाखाओं में सुरक्षा व्यवस्था बेहद कमजोर है, जिससे ऐसी घटनाएं आसानी से हो जाती हैं। इसी के विरोध में बैंक कर्मचारियों ने 25 और 26 मई को हड़ताल पर जाने का ऐलान किया है।

कर्मचारियों की मांग है कि बैंक शाखाओं में पर्याप्त सुरक्षा गार्ड, सीसीटीवी निगरानी और आपातकालीन प्रतिक्रिया व्यवस्था को मजबूत किया जाए। उनका कहना है कि केवल आर्थिक लेन-देन ही नहीं, बल्कि कर्मचारियों और ग्राहकों की सुरक्षा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।

इस पूरे मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने 120 से अधिक अधिकारियों और जवानों की टीम जांच में लगा रखी है। अलग-अलग टीमें तकनीकी जांच, फील्ड इन्क्वायरी और संदिग्धों की तलाश में लगातार छापेमारी कर रही हैं।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि गिरफ्तार आरोपी केवल इस वारदात के छोटे हिस्से हैं, जबकि मुख्य गिरोह अभी भी फरार है। संभावना जताई जा रही है कि यह एक अंतरराज्यीय गिरोह हो सकता है, जो कई राज्यों में इसी तरह की वारदातों को अंजाम देता रहा है।

जांच एजेंसियां अब यह भी पता लगाने में जुटी हैं कि लूटी गई रकम का वितरण कैसे किया गया और क्या यह पैसा किसी बड़े नेटवर्क या अवैध गतिविधियों में इस्तेमाल किया गया है। इसके लिए वित्तीय लेन-देन की भी जांच की जा रही है।

यह घटना न केवल सूरत शहर की कानून-व्यवस्था पर सवाल उठाती है, बल्कि बैंकिंग सुरक्षा व्यवस्था की खामियों को भी उजागर करती है। खासकर तेजी से बढ़ते शहरी क्षेत्रों में जहां वित्तीय गतिविधियां अधिक होती हैं, वहां सुरक्षा ढांचे को मजबूत करना अब एक अनिवार्य आवश्यकता बन गया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह की घटनाएं डिजिटल निगरानी और पारंपरिक सुरक्षा दोनों के बीच समन्वय की कमी को दर्शाती हैं। यदि बैंकिंग संस्थानों में आधुनिक सुरक्षा तकनीकों और रीयल-टाइम मॉनिटरिंग को और मजबूत किया जाए, तो ऐसे अपराधों को काफी हद तक रोका जा सकता है।

फिलहाल पुलिस की प्राथमिकता पूरे गिरोह को पकड़ने और लूटी गई रकम की बरामदगी है। जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ रही है, इस सनसनीखेज वारदात के और भी बड़े खुलासे होने की संभावना जताई जा रही है।

पुडुचेरी में एनडीए की सत्ता बरकरार, 30 सदस्यीय विधानसभा में 18 सीटों के साथ मजबूत स्थिति

पुडुचेरी। दक्षिण भारत के केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी की राजनीति में एक बार फिर राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने अपनी पकड़ मजबूत करते हुए सत्ता में निरंतरता बनाए रखी है। 30 सदस्यीय विधानसभा में एनडीए ने 18 सीटें जीतकर स्पष्ट बढ़त हासिल की है, जबकि कांग्रेस गठबंधन को 6 सीटों पर संतोष करना पड़ा। शेष 6 सीटें अन्य दलों और निर्दलीय उम्मीदवारों के खाते में गई हैं।

इस चुनावी परिणाम ने पुडुचेरी की राजनीतिक स्थिरता और गठबंधन राजनीति को एक बार फिर चर्चा के केंद्र में ला दिया है। परिणामों के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि क्षेत्रीय नेतृत्व और गठबंधन रणनीति ने इस चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाई है।

इस चुनाव का एक प्रमुख आकर्षण मुख्यमंत्री एन. रंगासामी की शानदार जीत रही। उन्होंने थट्टांचावडी विधानसभा सीट से एक मजबूत प्रदर्शन करते हुए 10,024 वोट हासिल किए और अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी ई. विनायगम को 4,441 वोटों के अंतर से हराया। रंगासामी की यह जीत न केवल व्यक्तिगत राजनीतिक प्रभाव को दर्शाती है, बल्कि उनके लंबे प्रशासनिक अनुभव और क्षेत्र में उनकी लोकप्रियता को भी मजबूत करती है।

एन. रंगासामी पुडुचेरी की राजनीति में एक अनुभवी चेहरा हैं और वे अब तक चार बार मुख्यमंत्री रह चुके हैं। 2001 से लेकर अब तक विभिन्न कार्यकालों में उन्होंने राज्य की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी लगातार उपस्थिति और प्रशासनिक अनुभव ने इस चुनाव में भी एनडीए को मजबूती दी है।

चुनाव परिणामों में कई सीटों पर कड़ा मुकाबला देखने को मिला, जिससे यह

स्पष्ट होता है कि मतदाता पूरी तरह एकतरफा निर्णय लेने के बजाय विकल्पों का आकलन कर रहे थे। कुछ क्षेत्रों में जीत का अंतर काफी बड़ा रहा, जबकि कुछ सीटों पर अंतिम राउंड तक मुकाबला बेहद करीबी बना रहा।

इसके अलावा, इस चुनाव में एक नई राजनीतिक शक्ति के रूप में तमिलागा वेत्री कषगम (टीवीके) ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। पार्टी के उम्मीदवार बी. रामू और साई जे. सरवनन कुमार ने क्रमशः मनवेली और तिरुभुवनई सीटों पर जीत हासिल की। यह परिणाम संकेत देता है कि क्षेत्रीय स्तर पर नए राजनीतिक दल भी धीरे-धीरे अपनी जगह बना रहे हैं।

कांग्रेस गठबंधन के लिए यह परिणाम अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं रहा। केवल 6 सीटों तक सीमित रहना पार्टी के लिए चिंतन का विषय बन गया है। हालांकि कुछ क्षेत्रों में पार्टी उम्मीदवारों ने कड़ा मुकाबला दिया, लेकिन व्यापक स्तर पर वे एनडीए की रणनीति और संगठनात्मक ताकत के सामने पीछे रह गए।

एनडीए की इस जीत का एक प्रमुख कारण मजबूत गठबंधन प्रबंधन और स्थानीय मुद्दों पर केंद्रित रणनीति को माना जा रहा है। रोजगार, बुनियादी ढांचा, शहरी विकास और कल्याणकारी योजनाओं को लेकर किए गए वादों ने मतदाताओं के बीच सकारात्मक प्रभाव डाला।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि पुडुचेरी जैसे छोटे लेकिन रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र में सत्ता बनाए रखना एनडीए के लिए राष्ट्रीय राजनीति में भी एक सकारात्मक संकेत है। यह परिणाम दर्शाता है कि केंद्र शासित प्रदेशों में भी गठबंधन की पकड़ मजबूत बनी हुई है।

चुनाव परिणामों के बाद अब सभी दल आगामी प्रशासनिक दिशा और नीतिगत प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। एनडीए सरकार के सामने अब यह चुनौती होगी कि वह विकास कार्यों की गति को बनाए रखते हुए जनता की अपेक्षाओं पर खरी उतरे।

कुल मिलाकर, पुडुचेरी का यह चुनाव परिणाम एक बार फिर यह साबित करता है कि स्थानीय नेतृत्व, गठबंधन संतुलन और विकास एजेंडा किसी भी चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। एनडीए की यह जीत न केवल सत्ता की निरंतरता का संकेत है, बल्कि आने वाले समय में क्षेत्रीय राजनीति की दिशा को भी प्रभावित कर सकती है।

भवानीपुर में ऐतिहासिक उलटफेर: ममता बनर्जी की हार से पश्चिम बंगाल की राजनीति में बड़ा भूचाल

नई दिल्ली/कोलकाता। पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक ऐसा नाटकीय मोड़ सामने आया है, जिसने पूरे देश का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। राज्य की सबसे चर्चित और हाई-प्रोफाइल सीटों में शामिल भवानीपुर से मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की हार ने राजनीतिक समीकरणों को पूरी तरह बदल दिया है। लंबे समय से इस सीट को उनका अभेद्य गढ़ माना जाता था, लेकिन इस बार परिणाम ने उस धारणा को पूरी तरह तोड़ दिया है।

मतगणना के अंतिम चरण में जो आंकड़े सामने आए, उन्होंने सभी राजनीतिक विश्लेषकों को चौंका दिया। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता शुभेंदु अधिकारी ने ममता बनर्जी को 15,114 वोटों के अंतर से पराजित किया। शुरुआती रुझानों में मुकाबला बेहद कड़ा माना जा रहा था, लेकिन अंतिम राउंड तक पहुंचते-पहुंचते भाजपा उम्मीदवार ने निर्णायक बढ़त हासिल कर ली और अंततः यह ऐतिहासिक जीत दर्ज हुई।

कुल मतों के अनुसार शुभेंदु अधिकारी को 73,463 वोट मिले, जबकि ममता बनर्जी को 58,350 वोट प्राप्त हुए। इस परिणाम ने केवल एक सीट का समीकरण नहीं बदला, बल्कि पूरे राज्य की राजनीतिक दिशा को नए मोड़ पर ला खड़ा किया है। भवानीपुर, जिसे अब तक ममता बनर्जी का सबसे सुरक्षित राजनीतिक क्षेत्र माना जाता था, वहां यह हार एक प्रतीकात्मक और रणनीतिक दोनों स्तर पर बड़ा

झटका है।

काउंटिंग की शुरुआत से ही मुकाबला बेहद दिलचस्प रहा। कई राउंड तक दोनों उम्मीदवारों के बीच अंतर बहुत कम रहा, जिससे यह अनुमान लगाना कठिन हो गया था कि अंतिम परिणाम किसके पक्ष में जाएगा। लेकिन जैसे-जैसे गिनती आगे बढ़ी, भाजपा उम्मीदवार की बढ़त लगातार मजबूत होती गई। अंतिम राउंड में यह बढ़त निर्णायक साबित हुई और पूरे चुनावी माहौल को बदल दिया।

इस परिणाम को केवल एक स्थानीय जीत के रूप में नहीं देखा जा रहा है, बल्कि इसे पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक बड़े परिवर्तन के संकेत के रूप में माना जा रहा है। पिछले कई वर्षों से राज्य की राजनीति में जिस नेतृत्व का वर्चस्व था, उस पर यह पहली बार इतना बड़ा सवाल खड़ा हुआ है।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि भवानीपुर सीट का परिणाम केवल व्यक्तिगत हार-जीत नहीं है, बल्कि यह जनता की बदलती मानसिकता और राजनीतिक प्राथमिकताओं का भी संकेत देता है। जिस क्षेत्र में लंबे समय से एक ही नेतृत्व मजबूत माना जाता था, वहां इस तरह का परिणाम यह दर्शाता है कि मतदाता अब नए विकल्पों और बदलाव की ओर देख रहे हैं।

चुनाव परिणाम सामने आने के बाद पूरे राज्य में राजनीतिक हलचल तेज हो गई है। भाजपा खेमे में इस जीत को ऐतिहासिक और निर्णायक बताया जा रहा है, जबकि दूसरी ओर तृणमूल कांग्रेस खेमे में गंभीर मंथन का दौर शुरू हो गया है। यह परिणाम आने वाले समय में पार्टी की रणनीति और नेतृत्व दोनों पर गहरा प्रभाव डाल सकता है।

इस हार के बाद ममता बनर्जी के राजनीतिक भविष्य को लेकर भी चर्चाएं तेज हो गई हैं। हालांकि उनके समर्थक इसे अस्थायी झटका मान रहे हैं और दावा कर रहे हैं कि पार्टी जल्द ही वापसी करेगी, लेकिन विपक्ष इस परिणाम को "राजनीतिक युग परिवर्तन" के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि इस तरह के हाई-प्रोफाइल मुकाबले केवल एक सीट तक सीमित नहीं रहते, बल्कि इनका प्रभाव पूरे राज्य और राष्ट्रीय राजनीति पर पड़ता है। भवानीपुर का यह परिणाम पश्चिम बंगाल की राजनीति में नए गठबंधन, नई रणनीतियों और नए नेतृत्व के उदय का संकेत भी हो सकता है।

भाजपा की ओर से इस जीत को जनता के जनादेश और परिवर्तन की मांग के रूप में देखा जा रहा है। पार्टी नेताओं का कहना है कि यह परिणाम राज्य में "नए राजनीतिक अध्याय" की शुरुआत है, जहां विकास और सुशासन को प्राथमिकता मिलेगी।

वहीं, राजनीतिक पर्यवेक्षक यह भी मान रहे हैं कि आने वाले दिनों में दोनों प्रमुख दलों के बीच आरोप-प्रत्यारोप और भी तेज हो सकते हैं। चुनाव परिणाम केवल सत्ता का संकेत नहीं होते, बल्कि यह भी दिखाते हैं कि जनता किस दिशा में बदलाव चाहती है।

भवानीपुर का यह परिणाम निश्चित रूप से पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक ऐतिहासिक मोड़ के रूप में दर्ज हो गया है। यह केवल एक चुनावी हार-जीत नहीं, बल्कि उस राजनीतिक यात्रा का महत्वपूर्ण पड़ाव है, जिसने राज्य के भविष्य की दिशा पर नए सवाल खड़े कर दिए हैं।

राजनीति में अयाराम-गयाराम: भारत में विचारधारा पर सत्ता का गणित हावी हो रहा है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। हमारे देश की राजनीति अब इस हद तक बिगड़ चुकी है कि इसे बेहद निम्न स्तर का कहा जा सकता है, जहां न केवल नैतिकता और सदाचार गायब हो गए हैं, बल्कि सरकार, जो चुनाव के दौरान किए गए वादों को भी लॉलीपॉप की तरह नहीं निभाती, पूरी तरह से स्तब्ध और सुस्त अवस्था में जी रही प्रतीत होती है।

आइए आज की बेहद हल्की-फुल्की राजनीति की बात करें, जहाँ आयराम-गयाराम कोई नई बात नहीं है। लेकिन अगर कुछ बड़े चेहरे भी इसी नीति के साथ आगे आते हैं, तो सवाल सिर्फ उनकी वफादारी पर ही नहीं उठता, बल्कि एक स्वस्थ लोकतंत्र के स्वास्थ्य पर भी सवाल खड़ा होता है।

राज्यसभा में "आम आदमी पार्टी" के 7 सांसदों का भाजपा में विलय न केवल कानून का उल्लंघन है, बल्कि यह उनकी अपनी (जिस पार्टी से वे आते हैं) विचारधारा को दर्शाने का भी मामला है। इस प्रकार, एक ओर भाजपा अपनी विशेष रणनीति (जिसमें कोई नीति ही नहीं है) की मदद से संसद में अपनी ताकत बढ़ा

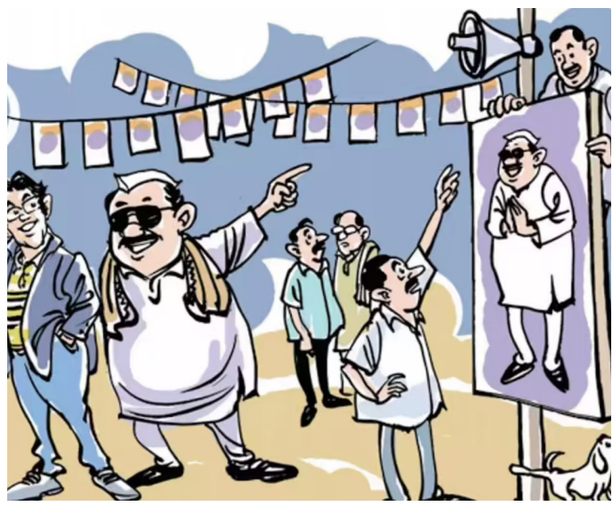

रही है, वहीं दूसरी ओर विपक्ष की एकता को तोड़कर भाजपा का रास्ता आसान बना रही है।

ऐसे में सवाल उठता है कि क्या भारतीय राजनीति में विचारों और सिद्धांतों से ज़्यादा सत्ता का गणित ही चल रहा है? क्या यह एकतरफा आयरम-गयारम एक धंधा बन गया है? या फिर यह लोकतंत्र पर सीधा हमला है? पहले तीर-कमान, फिर घड़ियाँ और अब झाड़ू भी बिकने लगी हैं? तो क्या अब इस विचारधारा की दुकान में सब कुछ बिकेगा? भाजपा के फॉर्मूले के अनुसार, विपक्ष को तोड़ो, किसी भी तरह से उसे सरकार से जोड़ो।

उत्तर भारत में मौसम का कहर : पहाड़ों पर बर्फबारी, मैदानी इलाकों में आंधी-पानी और ओलावृष्टि से जनजीवन प्रभावित

शिमला/देहरादून/लखनऊ। उत्तर भारत के बड़े हिस्से में मौसम ने एक बार फिर अचानक करवट ले ली है और इसका असर लोगों के दैनिक जीवन से लेकर कृषि और बुनियादी ढांचे तक हर जगह देखने को मिल रहा है। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में सोमवार से शुरू हुई तेज हवाओं, बारिश, ओलावृष्टि और ऊंचाई वाले क्षेत्रों में बर्फबारी ने हालात को पूरी तरह बदल दिया है। जहां पहाड़ों में ठंड फिर से लौट आई है, वहीं मैदानी इलाकों में आंधी और बारिश ने जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित किया है।

हिमाचल प्रदेश में पिछले तीन दिनों से मौसम लगातार खराब बना हुआ है। शिमला, कुल्लू, मंडी और आसपास के इलाकों में रुक-रुक कर बारिश के साथ तेज हवाएं चल रही हैं, जिससे कई जगह पेड़ गिर गए और सड़क यातायात बाधित हुआ है। बिजली आपूर्ति भी कई क्षेत्रों में प्रभावित हुई है, जिससे स्थानीय लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा। ऊंचाई वाले इलाकों में ओलावृष्टि ने सेब और अन्य बागवानी फसलों को नुकसान पहुंचाया है, जो इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार हैं। वहीं, ऊंची चोटियों पर हल्की बर्फबारी दर्ज की गई है, जिससे तापमान में अचानक गिरावट आई है और ठंड का असर फिर से महसूस किया जा रहा है।

बीते 24 घंटों में कई स्थानों पर उल्लेखनीय बारिश दर्ज की गई है, जिसमें सराहन, चौपाल, घागस और शिमला प्रमुख हैं। कई क्षेत्रों में बिजली कड़कने और तेज हवाओं के कारण जनजीवन प्रभावित हुआ है। मौसम में आए इस बदलाव ने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों को प्रभावित किया है, विशेषकर उन लोगों को जो खुले क्षेत्रों में रहते हैं या यात्रा पर निर्भर हैं।

इसी तरह उत्तराखंड के पर्वतीय इलाकों में भी मौसम अस्थिर बना हुआ है। बादलों की आवाजाही और तेज हवाओं ने ठंडक बढ़ा दी है। कई जगहों पर हल्की बारिश और ओलावृष्टि की सूचना है, जिससे स्थानीय लोगों की दिनचर्या प्रभावित हुई है। पर्यटन गतिविधियों पर भी इसका असर पड़ा है क्योंकि खराब मौसम के कारण पर्यटकों की आवाजाही कम हो गई है।

सबसे ज्यादा असर मैदानी इलाकों में उत्तर प्रदेश में देखने को मिला है। लखनऊ समेत कई जिलों में सोमवार सुबह अचानक धूल भरी आंधी के बाद तेज बारिश हुई, जिससे पूरे क्षेत्र में अफरा-तफरी का माहौल बन गया। कई जगह हवा की रफ्तार 80 से 100 किलोमीटर प्रति घंटे तक पहुंच गई, जिससे पेड़ उखड़ गए और बिजली के खंभे गिर गए। सड़क यातायात बाधित हुआ और कई क्षेत्रों में लंबा जाम लग गया।

लखनऊ, अयोध्या, बाराबंकी, गोंडा, बलरामपुर, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हरदोई, उन्नाव और रायबरेली जैसे जिलों में आंधी और बारिश का व्यापक असर देखा गया। कई इलाकों में पेड़ गिरने से रास्ते बंद हो गए और बिजली आपूर्ति भी बाधित रही। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण रही, जहां खेतों में पानी भर गया और फसलों को नुकसान पहुंचा। इस मौसम परिवर्तन का सबसे गंभीर असर कृषि क्षेत्र पर पड़ा है। गेहूं की कटाई का समय होने के कारण खेतों में रखी फसलें बारिश और तेज हवाओं की वजह से भीग गईं, जिससे उनके खराब होने का खतरा बढ़ गया है। इसके अलावा आम और अन्य बागवानी फसलों को भी ओलावृष्टि से नुकसान पहुंचा है, जिससे किसानों की चिंता बढ़ गई है। कई किसानों का कहना है कि अगर यही स्थिति कुछ दिन और बनी रही तो उनकी पूरी मेहनत पर पानी फिर सकता है।

शहरी क्षेत्रों में भी जनजीवन प्रभावित हुआ है। स्कूलों में छात्रों की उपस्थिति कम रही क्योंकि अभिभावकों ने बच्चों को खराब मौसम को देखते हुए घर पर ही रोक लिया। ऑफिस जाने वाले लोगों को भी यातायात बाधा और जलभराव जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा। कई जगहों पर बिजली कटौती ने स्थिति को और कठिन बना दिया।

मौसम विभाग ने चेतावनी जारी करते हुए कहा है कि अगले कुछ दिनों तक स्थिति स्थिर नहीं रहेगी। 4 से 7 मई के बीच कई क्षेत्रों में 40 से 60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलने, गरज-चमक के साथ बारिश और ओलावृष्टि की संभावना बनी हुई है। कुछ स्थानों पर बिजली गिरने (वज्रपात) का भी खतरा बताया गया है, जिससे लोगों को सतर्क रहने की सलाह दी गई है।

मौसम विभाग ने कई जिलों में येलो और ऑरेंज अलर्ट जारी किया है और लोगों से अपील की है कि खराब मौसम के दौरान अनावश्यक यात्रा से बचें और सुरक्षित स्थानों पर रहें। साथ ही प्रशासन को भी राहत और बचाव कार्यों के लिए तैयार रहने के निर्देश दिए गए हैं।

सरकारी स्तर पर राहत कार्य तेजी से शुरू कर दिए गए हैं। कई जिलों में बिजली बहाली, पेड़ हटाने और सड़क साफ करने का काम जारी है। प्रशासन नुकसान का आकलन कर रहा है और प्रभावित लोगों को राहत पहुंचाने की प्रक्रिया भी शुरू की गई है।